CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि. ३१८
२८१

नीली - पिपासा

8.3

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

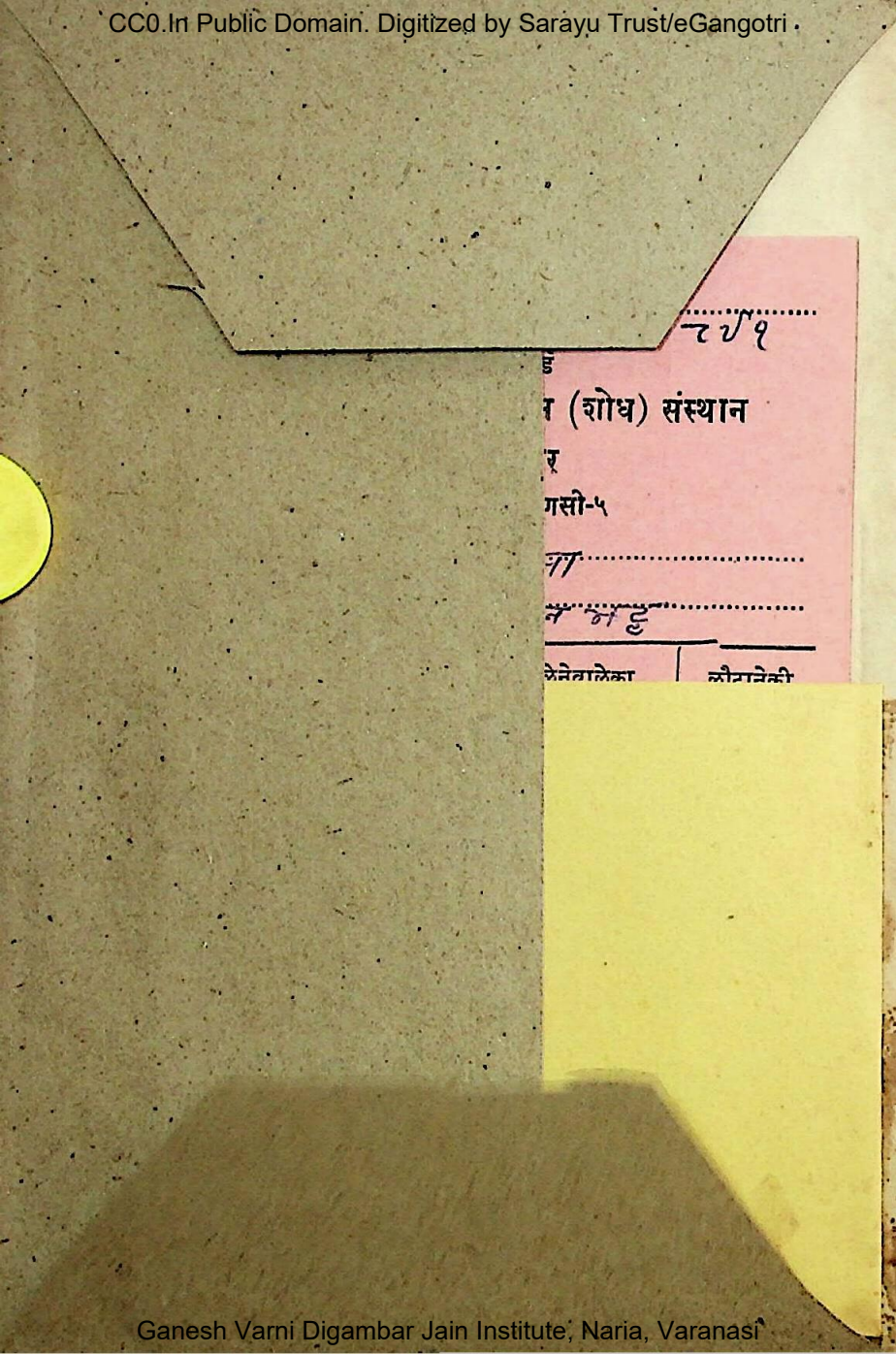

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

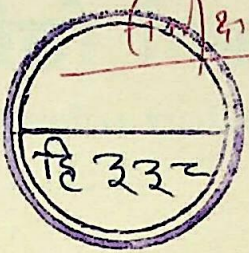

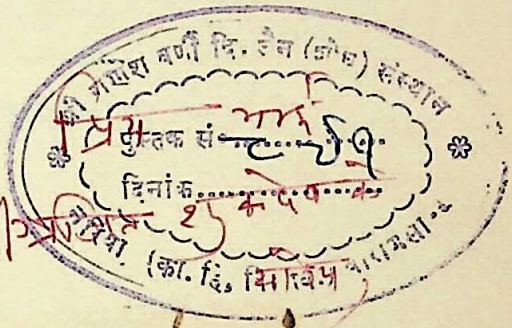

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

C0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौलो पिपासा

(सांगीतिक-दार्शनिक-प्रायोगिक काव्य-संग्रह)

कवि :

कृष्णजीवन भट्ट

भूमिका :

आचार्य श्री जानकीवल्लभ शास्त्री

वितरक :

साहित्य-संस्थान

ब्राह्मण टोली

मुजफ्फरपुर

(बिहार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशिका :
मञ्जुबाला 'कृष्णा', बी० ए० (ऑनर्स)
विद्यारत्न, विद्यावाचस्पति

स्वत्वाधिकारी :-
कृष्णजीवन भट्ट

आवरण : मधु-मूर्च्छित आकृतियाँ

शिल्पी : महादेव नारायण

मूल्य : १·५०

प्रथम संस्करण : नवम्बर–१९६७

मुद्रक :-
चन्दा प्रेस,
मुजफ्फरपुर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐकार स्वरूप

पिताश्री वैद्यनाथ भट्ट

की

पुण्य-स्मृति

में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

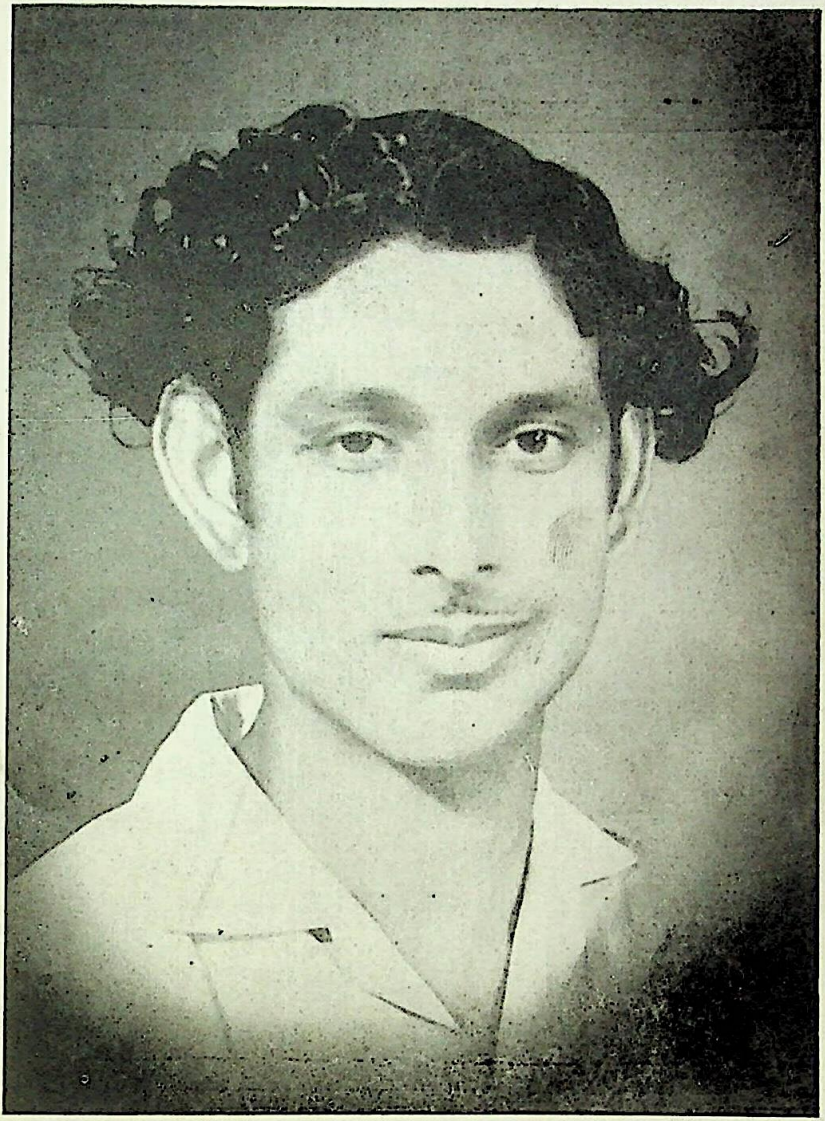

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरित स्रोत

(१)

काल-प्रवाह में बहते-बहते बहुत कुछ बह गया है। केवल किनारे की कुछ चकमक चिनगारियाँ अब भी जब-तब याद आ जाती हैं। मैं उन दिनों गवर्नमेंण्ट संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर में साहित्य का प्राध्यापक था, जब पहले-पहल एक बचकाने छात्र के रूप में भट्टजी को देखा था। तब से कितने ही मोड़ों पर अटकते, कितनी ही आँकी-बाँकी पगडंडियों पर भटकते हुए अब वह आहिस्ता-आहिस्ता उस मंजिल पर पहुँच गए हैं जहाँ उनकी हस्त दृष्टि ने एक नया विस्तार पालिया है। पैनी प्रज्ञा ने एक नई शक्ति अर्जित कर ली है। ऋजु प्रतिभा ने एक अजब-सा बाँकपन वर लिया है। आज वह विद्यावाचस्पति हैं; सस्कृत में शास्त्री; और अंग्रेजी-हिन्दी में एम० ए०; कवि हैं, कथाकार हैं, आलोचक हैं। तब का एक निर्विशेष व्यक्ति आज समाज और साहित्य का एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। ऐसा अनुल्लङ्घ्य व्यक्तित्व जो क्षण भर रुकता है तो फिर उड़कर डगर पर छा जाता है; कि आप चाहे उसके पक्ष में राय दें या विपक्ष में मगर उसके अनतुले अस्तित्व को झुठला नहीं सकते।

भट्टजी की प्रतिभा के अनेक आयाम हैं। वह लेखक भी हैं और वक्ता भी। हिन्दी-अंग्रेजी में समान अधिकार के साथ लिख-बोल सकते हैं। उनका कवि भी नई-पुरानी डालों पर एक-सा टेरता है। बुद्धि अंग्रेजियत में रच गई है, मगर मानस में संस्कृति का राग गहराया हुआ है। उनके कृतित्व में प्रतिभा, व्युत्पति और अभ्यास तीनों की संश्लिष्ट प्रौढ़ि दीख पड़ती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बौद्धिक प्रकर्ष ने उन्हें भावुकता में ऊभ-चूभ होने से बचा लिया है, अनुभूति की गहराई ने हवाई कल्पना की सैर नहीं करने दी है। उनके व्यक्तित्व में एक विरल सन्तुलन है जो इस बहाव-बहकाव के जमाने में दुर्लभ है।

अनेक भाषाओं की भाँति साहित्य की अनेक विधाओं ने भी उनकी सृजनात्मक क्षमता को उत्तेजित किया है, किन्तु मैं उनके कवि और आलोचक को ही उल्लेख्य समझता हूँ। यद्यपि उनके आलोचनात्मक निबन्ध इक्के-दुक्के ही आलोक में आए हैं; किन्तु इस सीमित परिमाण में भी गुणात्मकता असीम रही है और वे बहुधा विशिष्ट चर्चा का विषय बने रहे हैं।

उनका कवि किसी एक ही धारा में नहीं बहा है। भाव और विचार अपने अनुरूप माध्यम में व्यक्त होते रहे हैं। उन्होंने गीत भी लिखे हैं, गजलें भी; प्रगीत मुक्तकों की भी रचना की है और मुक्त वृत्तों की भी। और नई कविता के तो वह एक जाने-माने कवि हैं ही।

कभी-कभी प्रतिभा के ये प्ररोह स्रष्टा की प्राणवत्ता के प्रमाण सिद्ध होते हैं; किन्तु कभी-कभी ऐसा नहीं भी होता है। एक के सधने पर सर्व-सिद्धि वाली उक्ति आज भी पुरानी नहीं हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक का नामकरण जिस नएपन की ओर संकेत करता है, सकलित रचनाएँ विविधता की बानगी होने के बावजूद सब समय उसका प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। यह इस पुस्तक की सबसे अधिक चौंकाने-वाली बात है।

आरम्भ की नौ रचनाएँ कदाचित् गीत-विधा के अन्दर आएँगी; किन्तु ये गीत न तो छायावादी सौन्दर्य, माधुर्य्य से आप्लुत हैं; न ही इनकी गणना नवगीतों में होगी। मैं निराला के गीतों को ही आदर्श गीत मानता हूँ, जिनका ताना-बाना शब्दों और स्वरों के सहज सन्तुलन से बुना गया है; किन्तु भट्ट जी की गीताकुलता स्वयं स्वीकारती है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुर भी ऐसा जो स्वर-सप्तक
तक ही नहीं नियन्त्रित रहकर
दिग्दिगन्त की मर्म-ग्रन्थि को
चरमाकुल कर, अभिमन्त्रित कर
बँध जाता है निज सीमा में
जो असीम है मुक्ति-प्राप्त-सा
अंकुर-अंकुर में चिर नूतन
स्रष्टा बनकर नाश छुपा है
सुन्दरि ! तेरे चल अंचल में
युग-युग का मधुमास छुपा है

स्पष्ट ही यह दोनों के बीच की कड़ी है जिसका निर्माण सर्वश्री भगवती चरण वर्मा, बच्चन, दिनकर, अंचल आदि ने छायावादोत्तर युग के आरम्भ में किया था।

सृजन का संकल्प भावना की गहराई को कुरेदता और बुद्धितत्त्व को तरङ्गित करता हुआ जिस प्रकार उफनता है, इसे गीतात्मक तो मानना ही पड़ेगा, गेय चाहे यह न भी हो।

भट्टजी की भाषा रागात्मक कम, अनगढ़ और ओजस्वी अधिक है। तत्सम शब्दों की अर्थवत्ता वाचालता की हद बचा ले जाती है, यों वह अनयाहे मन को मथ नहीं पाती। प्राणों की ऊष्मा जहाँ कहीं प्रकट हुई है, वहाँ जैसे पीपल के पत्ते पर चाँदनी चमक उठी है—

सिन्धु को बिन्दु बन पार मैं कर गया
पर अगम प्यास से कण्ठ जलता रहा !

× × ×

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थी अमरता खड़ी मार्ग में किन्तु मैं
जिन्दगी के लिए हाथ मलता रहा !

कविता जब सुन्दरता से कतरा कर सचाई का इजहार करने लगती है, तब कवि दार्शनिक हो जाता है। दर्शन जब व्यक्तित्व का अङ्ग बन जाता है, तब उससे निरी सुन्दरता की माँग नहीं की जा सकती। भट्टजी का कवि मर्मी नहीं, विवेकी है; भावुक नहीं, विचारक है। उसके आनन्द में हिलोर नहीं, उसकी पीड़ा में भी अकृतार्थता की कराह नहीं है। जैसे वह सारे द्वन्द्वों को तटस्थता से स्वीकार कर, ग्रन्थियों की अभिज्ञता से सचेत-सावधान रह कर जिन्दगी की डगर पर निर्भय विश्वस्त चरण रख रहा हो !

दूसरे शब्दों में कवि विद्वान हो आया है जिस कारण उसकी कृति में कैशोर सुलभ मिठास की जगह दार्शनिक प्रौढि ही उजागर हुई है—

प्राणतन्तु पर आधारित
इस विश्वकमल का वह विकास है
नामरूपता जिसकी गति है,
उसका वह शाश्वत प्रकाश है,
उसकी मन्दस्मिति की आभा
चिर समाधि है, मोह - मुक्ति है,
उसका ही निर्वेद - ज्ञान
निर्वाण ज्योतिकी सहज शक्ति है !

कवि अपने अस्तित्व को अपरिमित परिभाषा में प्रतिबिम्बित होता देखता है। कौन जाने, इसीलिए उसने जो कल्पना, मौलिकता आदि की परिभाषाएँ गढ़ी हैं वे अपरिमित न होने के कारण उसके अमित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेजस्वी अस्तित्व को नहीं उभार पातीं। उसका मन-दर्पण धुँधली छवियाँ उगाता है, यों प्राणपंखों की महत्वाकांक्षी उड़ान की ध्वनि-प्रतिध्वनियाँ वातावरण में गूँजती रहती हैं। मैं कहूँ, इन्हीं ध्वनियों की गति में से कवि की आन्तरिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है :—

इसको कोई रोकेगा क्या ?
झंझानिल को टोकेगा क्या?

यों कवि की इस नेक सलाह का मैं भी कायल हूँ :—

मौलिकता को समझो,
गुण को परिमाणों में तुम मत आँको।

(२)

भाषा के बाद छन्द की ओर ध्यान जाता है। ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे प्रयासहीन भाषा कवि के भावों की सहज अनुगामिनी बनी रही है कि वह चाहें उसे चाँदनी रात में नदी किनारे ले जाएँ या चिलचिलाती धूप में रेगिस्तान की सैर को निकल पड़ें। कुछ उसी प्रकार छन्द भी भावों की प्रखरता को मन्द नहीं करते; स्वच्छन्दता को अपनी लय में मूँद नहीं लेते; बन्द नहीं करते :—

"पल्लवों के होंठ पर सुधि-लय थिरकती
औ' लता की गोद में कलिका पुलकती
चिर किशोरी कल्पना के
रूप - रस - गुण-सिन्धुओं को मुक्त करता
प्यार का पंथी नयन-मन सिक्त करता
छन्द रच-रच गा रहा है।"

(६)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—छन्द की साधना का यह एक उज्ज्वल उदाहरण है। इसमें वह सब कुछ है, जो साधना से साध्य है। कवि के भावप्रवाह को इस अमलिन पुलिन से सहज ही निहारा जा सकता है। आगे चलकर बौद्धिकता ने जोर न आजमाया होता तो रस के इस अनर्गल बहाव में पूरी-की-पूरी सहृदयता बह भी सकती थी।

भाषा पर व्याकरण का पहरा है तो छन्द पर अलमस्ती का। यहाँ-वहाँ जो लापरवाही बरती गई है, वह कवित्व के उन्माद के कारण नहीं, छन्द को बन्धन के रूप में न स्वीकारने के कारण ही। भट्टजी ने संस्कृत भी पढ़ी है, पर उसकी पद-शय्या कदाचित् उन्हें नहीं भाई। उनकी शैली की डाल संस्कृत शब्दों से लदी है पर उसमें कलियाँ अपरम्परा की ही फूटी हैं। उनकी गन्ध दूर-सुदूर की नहीं, समसामयिक विजन सृजन-परिवेश की ही है।

"मुझे दूर से ही पुकारा करो तुम"

का श्लथ-शिथिल अनुरोध अपने स्वर की मन्दता-दुर्बलता में अतिशय सान्निध्य का आशी-अभिलाषी है।

उसकी प्रेयसी का प्यार चाँद-सितारों को झुठलाता है क्योंकि उनका प्रकाश दिशाकाश व्यापी है और वह उसे अपने ही वृत्त की बीन बनाना चाहता है।

इन गीतों में जो छन्द व्यवहृत हुए हैं, वे चञ्चल भावों के अनुरूप हैं, ऐसे स्थल कवि की सहृदयता को स्वरित करने में अत्यन्त सफल सिद्ध हुए हैं। 'पूनम गीत' के छन्द में स्वर-सौन्दर्य्य का आवर्त देखते ही बनता है। अपने आपमें न समाती हुई चाँदनी की अँगड़ाई की तरह इसकी सुषमा केलि-कल्लोलों पर निखरती है। काश कि इन स्वरों को सँवारने वाले शब्द भी होते!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संकलन में कतिपय राष्ट्रीय गीत भी हैं। कवि की तरुणाई इन गीतों में सार्थक हो गई है। राष्ट्र की नई पीढी को उसने नई उमंग-तरंगें दी हैं; नई दृष्टि और नए स्वप्न दिए हैं। किशोरों और तरुणों के प्राणों में उसने नई चेतना का संचार किया है जिससे उनके प्राण अपने देश के उचित अभिमान से एकाकार हो जाएँ; नए आदर्श, नई आस्था सिरजें और नए रक्त में सृजन की स्फूर्ति की नई रागिनी बज-बज उठे। कहना न होगा, इस हताश, निराश, कुण्ठित और आत्मघाती पीढ़ी को ऐसे ओजस्वी-तेजस्वी स्वरों की अधिक आवश्यकता है।

मानसिक ऋतु-परिवर्तन के क्रम में कवि ने यहाँ-वहाँ सुन्दर ऋतु-गीतों की भी सृष्टि की है। गले-गले में थिरकने वाले ये गीत लोक-संस्कृति की प्राणवंत वाणी के रूप में सञ्चरित होंगे, यह आशा अकारण नहीं है।

रूप-शिल्प में कवि का मन बहुत नहीं रमता; किन्तु जहाँ-कहीं उसने प्रयास किया है, उसे आशातीत सफलता मिली है।

चेतना के इतने स्तरों पर विचरने वाला कवि का मन सीमान्त व्यापकता की 'पिपासा' सँजोए हुए है। भले ही उसकी खुशबू-भरी अमराई में मलय-समीर झिर-झिर नहीं तिरी; किन्तु मधुमाते क्षणों में दिए की तरह लालसा की लौ झिलमिलाती रही है।

(३)

वैविध्यपूर्ण मानवीय मनोभावों के गुम्फित उतार-चढ़ाव का संवेद्य संप्रसारण 'नीली पिपासा' की कविताओं का केन्द्र-बिन्दु है। बेहद ऊँचे उठे भावों के ज्वार और भाटे हमारी वृत्ति को अपनी ओर खींचते हैं, हृदय को अनावृत सौन्दर्य के तन्तुओं से घेरते हैं और जीवन की संवेगमय अनुभूतियों की तीव्रतम अभिव्यञ्जनाओं से उन्मन प्राणों को झनझना देते हैं। कवि के हृदय में भावों का तूफान जोर मार रहा है; मस्तिष्क में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विचारों का दरिया हिलोरें ले रहा है; हमें उसकी व्यक्त मुद्राओं में अव्यक्त व्यथा का भान होता है। बुद्धि से लिपटा हुआ मन रागात्मिका वृत्तियों के उफान को नहीं रोक पाता। क्षितिज में झूलनेवाली छवियों को छुए विना उसके रंगीन पंखों को चैन नहीं है। कभी वह यह चाहता है कि उसका अन्तर स्पन्दित भर हो, बोल फूटें अनुभूतियों के और कभी दृश्य उसकी पलकों को गुदगुदाते हैं और प्रतिक्रिया व्यक्त करती है बुद्धि। अभी वह खिलने और छिटकने के अन्तराल को गहरी संवेदनाओं से नहीं पूर पाया है। मैं समझता हूँ, तिरते भावों और विचारों की लयात्मक अन्विति, उत्पीड़ित मन और उत्तेजित मस्तिष्क की भाव-विभोर मैत्री उसकी सहज साधना की स्वाभाविक सिद्धि होगी। अन्यथा-

अलियों का कलियों के उर पर
प्यार-भरा गुंजार प्रचुर है
और
दाह-संस्कार के बाद की राख पर तुलसी का पौधा है।

-की अन्तर्विरुद्ध अभिव्यक्तियों में नकली मुस्कानों से असली कवि-व्यक्तित्व का सौदा घाटे का होगा। दिशाहारा बोध को समकालीन प्रशस्ति के साथ-साथ प्रश्नचिह्न की चुनौती का भी सामना करना होगा।

शाश्वत सौन्दर्य के अगीत संगीत में विभोर हो उठने के बजाय कवि जीवन के अव्यवस्थित यथार्थ का द्रष्टा और स्रष्टा है, यह उसकी पार्थिव उपलब्धि है। उसका वाद रस-विरोधी नहीं; वह वृत्तियों का चित्रण प्राणों के प्रकाश में करता है; यह उसकी दार्शनिक उपलब्धि है।

'नीली पिपासा' में प्रतीकों की योजना प्रचुर परिमाण में हुई है; कृति के नाम से भी यह संकेत मिलता है,जब भी पूरी पुस्तक की सामान्य भाषा में सारे स्वप्न और चिन्तन सहजता और गम्भीरता से अभिव्यक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं पा सके हैं। आशा है, कवि के अगले प्रकाशनों में दुरूहता और क्लिष्टता से मुक्त चित्रात्मक भाषा के दर्शन सुलभ होंगे।

यद्यपि प्रगति और प्रयोग के युगों में कवि का व्यक्तित्व विकसित हुआ है जब कि कवित्व के परम्परित उपकरणों में चेष्टापूर्वक आमूल परिवर्तन हो रहे थे किन्तु प्रस्तुत कवि में पुराने अलङ्कारों का जमघट न सही, ध्वनियों के मोतियों की रेशमी फिसलन न सही, किन्तु नीलम की प्याली में माणिक मदिरा के मोहक उफान का व्यामोह शेष है। उसके अभिनव विम्ब-विधान में भी परम्परा की दीप्ति है, गरिमा है। उसकी आधुनिकता न टूटी हुई है, न अमरबल्लरी-सी निर्मूल ही है। वह काव्य-कारण शृङ्खला की नई झनकार है। कुल मिलाकर कवि का संश्लिष्ट व्यक्तित्व युग के सहज विकास का क्रमिक प्रकाश ही है।

भट्टजी की काव्य-साधना समकालीनों में सबसे पृथक् प्रकार की है। उनके ज्वलन्त मौलिक अस्तित्व को अनायास लक्ष्य किया जा सकता है। उसमें तरुणाई का तूफान भी है और प्रौढ़ अनुभूति की गहराई भी; ज्वाला की लपटें हैं तो सौन्दर्य के प्ररोह भी। उनके काव्य में प्रकाश और अन्धकार, तुङ्ग तरङ्ग और अतल शान्ति की अविराम आँख-मिचौनी है। यह चिन्तन के साथ ललकार और व्यंग्य के साथ विवेक विरलों में ही पाए जाते हैं।

जीवन और जगत् के प्रति कवि की जागरूकता सतत सन्धेय है। उसके प्यासे प्याले में आग्नेय हाला उफनती है; भैरव रव में सालस-लालस मधुर मनुहार भी है।उसके अन्तर-प्रान्तर में जैसे ज्वलन्त ज्वालामुखी का उत्ताप है जो पिघलकर स्वर्ण-वर्णों में ढलता है तो ऐसी विदग्ध अनुभूति-भरी शब्दों की एकावली उसकी करुण-कठोर मधुर-प्रखर कविता के गले में झूलती है! उसकी कल्पना की अलक्ष्य ऊँचाई जीवन के धरातल पर लक्ष-लक्ष रूपों में लक्षित होती है। क्षितिज के उस पार धुँधलके में खोई हुई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावना ने इसकी कविता में पुलक-प्रकम्पित अक्षय आभा प्राप्त की है, जिसके आलोक-मण्डल के गिर्द हरी-पीली परिछाइयाँ सत्य और सुन्दर के मिले-जुले चित्र बनाती रहती हैं।

(४)

अपने अस्तित्व की ग्रन्थिलता से अपरिचित और गहरे अनुभवों की समतल ऋजुता में निर्विकल्प कविवर भट्ट को मैं जाने-पहचाने चेहरों की मुस्कान से अनविंधी कठोरता एवं प्रश्न-व्यथित मौन दृष्टि से देखता रहा हूँ। ऊपर से ऊट - पटांग लगने वाले उनके अतलान्त व्यक्तित्व की कई परते हैं जिनकी रुखाई-चिकनाई से उनकी चेतना चौकन्नी रहती और उन्मुक्त हास में भी पूरी-की-पूरी नहीं फूट पाती है—सतरंगी झाइयों में इकरंगी उज्ज्वलता जैसे बिखर-बिखर जाती है।

वेश-भूषा से छायावादी, अटपटी अभिव्यक्तियों से प्रगतिवादी और हर टूटन में नए-नए सिरजन की बेकली से प्रयोगवादी कवि भट्ट की कृति का सर्वश्रेष्ठ अंश उसका उत्तरभाग है जो नई कविता के प्रतिमानों द्वारा प्रशंसित और प्रमाणित होकर कवि के मन की शिराओं-उपशिराओं से रिश्ता कायम कर चुका है। कवि का अकुण्ठ कठ मञ्च को रोमांचित करता रहा है:—

"ऐसा वह पेड़ है अफीम का,
उसकी ही मादक नशीली-सी गन्ध यह सभ्यता।
× × ×
यह सभ्यता अजगर की बेटी है,
जिसका विष दूर से ही चढता है जादू-सा ?"

इन मुद्राङ्कित पंक्तियों की आवृत्ति के साथ जैसे उसके भीतर का सारा रोष-आक्रोश खिंचा चला आता है। उसके चेहरे की तमतमाहट पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यंग्यों के बौर झुक-झुक आते हैं; कमान-सी तनी भँवें आह-वाह की बे-सँभाल छल-छलाहट से नम होकर टूट-टूट जाती हैं; संघर्षरत पीड़ित प्रतप्त आत्मा को तड़पन-भरे क्षण जैसे हिमकण के छींटों से नहला देते हैं !

चेतन अनुभूतियों से संचालित होने वाले संश्लिष्ट संवेगों में व्यक्तित्व का मर्म महसूस करने वाले हर्बर्ट रीड के इस कथन का तथ्य कम-से-कम मेरे लिए ऐसे ही क्षणों में उद्घाटित हुआ है :—

I believe that Criticism must concern itself not only with the finished work of art, but also with the workman's mental activity and his toils."

मानसिक प्रक्रिया के सुसंबद्ध-संश्लिष्ट स्वरूप को कवि की आलोक-वलयित नैसर्गिक मुद्राएँ किस प्रकार प्रत्यक्ष कराती हैं, कभी उत्तप्त साँसों की सुलगती पगडंडियों से गुजर कर ही समझा जा सकता है।

संभव है, रंग और गन्ध की रेखाएँ खींचने के सिलसिले में मैं कमल का अप्रभावित अङ्कन न कर पाऊँ ! डाल कँटीली गुलाब की कँटीले मृणाल की सूत्रबद्धता से पृथक् प्रतीतियोग्य है, प्रतीति न हो तो एक-सी चुभन झेलनी होगी, वाद क्या करेगा ?

"मेरा तन एक वाद्य-यन्त्र है,
जिसको छू देने पर
कोमल मन-प्राणों के तारों पर
गूँजता संगीत आत्म-दर्शन का !"

× × ×

" जल्पनाओं के आधार पर जीने वाले
भावनाओं की स्मृति मात्र के सहारे,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दार्शनिक इतिहास के क्षणों को पी सकते हैं,
जी नहीं सकते ?'

× × ×

"डोल रहा ब्रह्माण्ड कठिन जो कूर्म-पृष्ठ-सा
डोल रहा ब्रह्माण्ड तरल
जो प्राणहीन, जीवाणु-पूर्ण कच्चे अंडे-सा किसी विहग के?

× × ×

तू भ्रम का आकाश अपने मन के व्यास पर से हटा दे,
जला डाल इस भ्रम के भूरे भदेस को
किसी बौद्ध सम्राज्ञी की अहम्मन्यता की तरह
और जन्म दे एक 'अन्यता' को
जो व्यापक हो, किन्तु कुण्ठित लघुमानवीयता नहीं
सृष्टि हो, किन्तु बिटनिक पीढी की
सुलगती हुई रीढ़ की फटती हुई हड्डी नहीं;
प्राणी हो, किन्तु कलख के कफन के नीचे
दफन होती हुई संक्रान्ति नहीं,
अपितु निर्निमेष दीप्ति हो आत्मा की ?"

ये काव्य-खण्ड प्रचलित शैली को एक नया मोड़ ही नहीं देते, नई कविता के इतिहास में अपनी विशिष्ट योजना जोड़ते हुए भी दिखलाई देते हैं। इनमें जीवन के नए परिवेशों का निर्माण भर नहीं, आधुनिकता को संश्लिष्ट बोध भी दिया गया है। ये नए स्वर युगबोध के नारे के नहीं, इनकी सुनियोजित प्रेरकता धूमल-धुन्ध, दुहरे-कुहरे और घुटन-भरी कुण्ठा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में सूर्योदयी चेतना के अनेक सम-विषम धरातल भी उजालती है। यहाँ फूलों के सीने में शोले समोए हुए हैं; बुझी उम्मीदों में प्राणों के दिए जलते हैं; झुके सुरमई आसमान में सिन्दूरी बादल घुमड़ते हैं; निगाहों में नए सपने लरजते हैं।

ये रचनाएँ कविवर कृष्णजीवन भट्ट की अपराजेय सृजन-क्षमता की परिचायिका हैं। उनकी नवोन्मिषित चेतना ने समकालीन जीवन की समस्याओं को आत्मसात् किया है और नए शिल्पों का सजग प्रयोग भी। परिवर्तित परिवेश में मानवीय संवेदनाओं को अधिक-से-अधिक ग्राह्य बनाने की सामर्थ्य उनकी भाषा की एक ऐसी विशेषता है जिसमें कहीं कमजोरी या मजबूरी नहीं है। प्रकाशन ऐसा है कि मेहनत के साए कहीं नहीं उभरते। छन्द नहीं है, किन्तु नए अर्थों की यथार्थता को प्रतिध्वनित करने वाले नाद की सुन्दरता की कमी नहीं है। यही हाल बिम्बों का है। इसकी अवतारणा में भी काफी सतर्कता बरती गई है, बिम्बों के रंगीन डोरे कथ्य की स्वच्छन्द स्वच्छन्दता को नहीं उलझाते, उसे ताकत और ताजगी ही देते हैं।

सतत् साधना की स्थिति में उनकी गणना नई कविता के प्रतिनिधि कवियों में होगी, यह विश्वास निर्मूल नहीं है।

कवि के अनुसार कदाचित् संकलन की सर्वोत्तम कविता 'नीली पिपासा' है। संकलन का नामकरण इस ओर संकेत करता है। इसमें बिम्बों की संकुलता के अतिरिक्त छद्म प्रतीकों का विशिष्ट विनियोग है। संश्लिष्ट अनुभूतियाँ अस्पष्ट सृष्टि का उपादान होती हैं। प्रस्तुत कलाकृति, किन्तु, ऐसी अस्पष्टता से अग्राह्य नहीं, गहन बन गई है। प्रवाह प्रतिनिमिष वेगवान ही होता गया है। तट तटस्थ-सा ताकता रहा है, और अभ्यन्तर की लहर ने हहर कर अन्तर को छू लिया है :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्बोध्य बोधों के अपने आयाम हैं !
यमुना - तट राधा के अपने घनश्याम हैं !!

यद्यपि नई कविता में क्षणानुभूतियों के सचेष्ट शिल्पन की प्रमुखता होती है, कविवर भट्ट में बुद्धि-संवेद्य कथ्य की व्यंग्यात्मकता भी अनुसन्वेय है। 'फोर क्वार्टेट्स' के ईलियट की-सी इन प्राणवान् पंक्तियों में-

जिज्ञासा जीवन की आशा है, मन की परिभाषा है,
चेतन संघर्षों के बीच स्तब्ध वात्या - आवर्त्तों में
क्षण के विमर्शों की, पल के संस्पर्शों की अव्याहत भाषा है;
ईहा की ज्वाला से आवृत्त, अन्तरिक्ष - बीच शान्त
ऊहा - सन्दोहों की बून्दों में बंद एक नीली पिपासा है।

द्विधा-मुक्त कवि की दार्शनिक सूक्ष्मता उद्घाटित हुई है, जो उसके संक्रांति-कालीन आन्दोलन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। मैं इस रागात्मक बौद्धिक कवि की स्तरीय जीवन-मूल्यों और दायित्वों के निर्वाह में सजग कृति का, कविता के क्षेत्र में, सहर्ष स्वागत करता हूँ और स्वीकृत को सन्दिग्ध दृष्टि से देखने वाले कृतिविद्य कवि का हार्दिक अभिनन्दन !

निराला निकेतन
मुजफ्फरपुर
२५-११-'६७

जानकीवल्लभ शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक प्रौढ़ कृति

"नीली पिपासा "के स्वनामधन्य कवि श्री कृष्णजीवन भट्ट अर्वाचीन हिन्दी साहित्य के ऐसे हस्ताक्षर हैं, जिनकी कीर्ति - कौमुदी पुस्तक-प्रकाशन के पूर्व ही अपनी समुज्ज्वल प्रतिभा देश - देशान्तरों में विकीर्ण कर चुकी है। किसी कवि - सम्मेलन के मंच पर जब कविता असमर्थ होकर त्राहि - त्राहि पुकारने लगी हो और उद्दण्ड - उद्धत श्रोताओं के तुमुल कोलाहल - कलरव-महोदधि में सुरसिकों का धैर्य-पोत आकण्ठ निमग्न होने जाता हो, तब जिस कवि का यह अदम्य विश्वास हो कि वह अपने जादू-भरे स्वरों से विक्षुब्ध जन - मन के उत्तेजित फणों को विस्मय-विमुग्ध कर सकता है, उसे हम सभी काव्य प्रेमी व्यक्ति कृष्णजीवन भट्ट के सुपरिचित नाम से भली भाँति जानते हैं।

"अफीम का पेड़" और "बिच्छू का पेड़" आदि कुछ ऐसे ही शीर्षक हैं, जो इस संकलन में प्रवेश पाने के पूर्व ही प्रचुर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। किन्तु, एक ओर जहाँ पूर्वोक्त कविताओं की धारा है, जिसे आज के साहित्य - सन्दर्भ में नयी कविता की संज्ञा से अभिहित किया जाता है, वहाँ "नीली पिपासा" में हम ऐसी रचनाओं का रसास्वादन भी करते हैं जिन्हें परम्परागत कह सकते हैं। यों परम्परा और अपरम्परा, इन दोनों ही दिशाओं में भट्टजी की काव्य - धारा उन्मुख हो रही है। कवि-हृदय की कोमल भावना पुरातन के प्रति मोह प्रकट कर रही है और मस्तिष्क की मज्जा - तन्तुओं का बुद्धि-तत्त्व विदग्ध वाग्विलास का लीला-विस्तार कर रहा है। आस्था और अनास्था, श्रद्धा और अविश्वास, तर्क और भावना, भट्टजी की काव्य-साधना के ये दोनों ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परस्पर विरोधी-से प्रतीत होनेवाले दो कूल हैं, जिनके अन्तराल से कवि की जीवन-नौका मन्थर गति से बहती चली जा रही है। त्रिवेणी के समान अभी गंगा और यमुना के ये दोनों प्रवाह संगमित होने पर भी पृथक् दृश्यमान हैं। "नीली पिपासा" अतएव दो खण्डों में वस्तुतः विभक्त है। "नीली पिपासा" शीर्षक विशेष से भी ये दोनों भाव स्पष्ट मूर्तिमान हो रहे हैं। 'नीली' का नकार जहाँ नवीनता-नश्वरता का द्योतक है, वहाँ 'पिपासा' की पुकार में पुरातन की प्राणवत्ता प्रतिध्वनित हो रही है। इस प्रकार कवि श्री कृष्णजीवन भट्ट का यह काव्य नवीनता-वादियों एवं पुरातनप्रेमियों दोनों ही वर्गों के लिए समान रूप से उपादेय, पठनीय एवं संग्रहणीय हो गया है।

भट्टजी के प्रेमी पाठक उनके इस प्रथम काव्य-संकलन की चिरकाल से प्रतीक्षा कर रहे थे। "नीली पिपासा" से प्रबुद्ध पाठकों की अकविता-पिपासा शान्त हो एवं भावुक पाठकों की रस-पिपासा उद्बुद्ध हो, तभी कवि के काव्य की सार्थकता है। भट्ट जी की यह कृति प्रकाशन की दृष्टि से यदि कुछ विलम्ब से आयी भी तो प्रौढ होकर ही आयी है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी रचना का राष्ट्र-भारती के प्रशस्त-प्रोज्ज्वल द्वार पर स्वागत - सत्कार होगा ही। इन्हीं दो शब्दों के साथ मैं कवि के मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ और प्रस्तुत रचना के रसास्वादन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सहृदय एवं प्रबुद्ध पाठकों पर ही छोड़ता हूँ।

—आरसी प्रसाद सिंह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीली पिपासा : गीत : कविताएँ

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१	विश्वसुन्दरी के प्रति	१
२	कौन हो तुम ?	४
३	अनुसन्धान - गीत	६
४	चेतना - संगीत	८
५	ज्ञान - मंगल	९
६	मौत का धुआँ	१०
७	किसीसे भी न हारा मैं	११
८	मन का पारिजात	१३
९	अभी अज्ञात छाया हूं	१५
१०	चार परिभाषाएँ	१७
११	कविता	१८
१२	शक्ति का व्यंग्य - संवाद	१९
१३	मेरा प्यार	२१
१४	प्यार का पंथी	२३
१५	अभिव्यक्ति - गीत	२५
१६	रूप - रागिणी	२६
१७	वीणा में झंकार नहीं है	२७
१८	पूनम - गीत	२८
१९	शरद - गीत	२९
२०	चाँद का प्रतिबिम्ब	३१
२१	अद्वैत - संगीत	३२
२२	जलती लौ एकाकिनी	३३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
२३	मेरा दीप जले	३४
२४	दुर्दिन के दिन हुए गुलाबी	३५
२५	कैसे दीप जलाऊँ ?	३६
२६	देशवासियो ! दिया जलाओ	३८
२७	दिशाकाश विजयी आह्वान	३९
२८	लहराता है अमर तिरंगा	४०
२९	आजादी की लहर हमारी तरुणाई है	४१
३०	राष्ट्र - ध्वज की नींव सींच दो	४२
३१	हो न तनिक उदास !	४३
३२	रंग तिरंगा ला रहा	४४
३३	हिमालय का आह्वान	४६
३४	सीमांचल पर होली	४८
३५	बहनो ! आज महावर छोड़ो	४९
३६	क्रान्ति की आँखे	५०
३७	नया सवेरा आ रहा	५२
३८	इन्सान ही है ईसा	५४
३९	जिन्दगी - मौत की लड़ाई	५५
४०	मिट्टी का गीत	५६
४१	वसन्त - संगीत	५७
४२	वसन्त - स्वगीत	५८
४३	वसन्त - सुषमा	५९
४४	नये वर्ष की रंगोली	६०
४५	होली - पंचम	६१
४६	होली : एक चित्र	६२
४७	वसंत - संगीत	६३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
४८	प्यार-भरा गुंजार - गीत	६४
४९	भ्रमर - गीत	६५
५०	निराला - निराजना	६६
५१	जवाहरलाल ! कितने लाल हैं पैदा हुए तुम से	६७

नई कविताएँ

५२	अफीम का पेड़	७१
५३	बिच्छू का पेड़	७३
५४	फूल बटन - होल का	७५
५५	घोंघे का शिकार	७६
५६	गिरगिट का शिकार	७७
५७	मेरा गुलाब	७८
५८	तीन बन्ध	७९
५९	प्रणव - पुत्रों की शोभा - यात्रा	८३
६०	दुर्वासा का शाप - भंग	८४
६१	देवता को चुनौती !	८५
६२	सीता : कुंठाओं की माता	८७
६३	आज का आदमी : एक परिभाषा	८८
६४	मौसम के स्वागत में	८९
६५	क्षितिज - रेख सिन्दूरी	९०
६६	अर्धनारीश्वर का पोस्ट - मार्टम	९१
६७	मेरी आत्मजाएँ	९२
६८	नीली पिपासा : तेजस् का बादवान	९३
६९	सम्मतियाँ	९७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्वसुन्दरी के प्रति

सुन्दरि ! तेरे चल अंचल में
युग-युग का मधुमास छुपा है !
तेरे आँगन की मिट्टी ही
बनती बीज उगाती अंकुर
जड़-चेतन की जड़ता-चेतनता
में भरती अविकल कल सुर
सुर भी ऐसा जो स्वर सप्तक
तक ही नहीं नियन्त्रित रहकर
दिग्दिगन्त की मर्म-ग्रन्थि को
चरमाकुल कर अभिमन्त्रित कर
बँध जाता है निज सीमा में
जो असीम है मुक्ति-प्राप्त-सा
अंकुर-अंकुर में चिर नूतन स्रष्टा
बन कर नाश छुपा है !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहती तू भू की हरीतिमा
में अलका नगरी की रानी

सौरभ साँसों में मुखरित
है तेरी ही वाणी कल्याणी

पतझड़ की प्रतिमा उतारती
तू सहसा मधु के दर्पण में

संसृति को वरदान दिया करती
चिर परिमल-जल-वर्षण में

सूर्य-चन्द्र-से चिर अतन्द्र हैं
तेरे लोचन जिनमें क्रमशः

जीवन का उन्मादन रोदन
और मृत्यु का हास छुपा है !

अरुणे ! सागर और नहीं कुछ,
तेरी करुणा का जल काला

इसीलिए हैं उसमें आँसू के
मोती, मणियों की माला

तेरी करुणा के सँग-सँग ही
सागर का गाम्भीर्य उमड़ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानव की जिन्दा देहों में
रह-रह धैर्य-अधैर्य उभड़ता
तेरे ही मृदु स्नेह जलद से
परिपूरित इस आसमान में
तेरे ही आँगन की मिट्टी का
सुन्दर इतिहास छुपा है!

स्निग्धे, सहसा ही जीवन की
अमराई में शिशिर सिहरते
अन्तरिक्ष का अन्तर स्पन्दित
झरते लाल गुलाल डाल से
आँखें सेंक दिया करती है
ऐसी वह तेरी सुन्दरता
दिग्वधुओं के पहलू रक्तिम
हो जाते हैं मरण-ज्वाल से
तेरे नूपुर के शिंजन में
मरघट में जो राख सुलगती
उसकी शाश्वत परिछाईं के
अधरों का उल्लास छुपा है!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कौन हो तुम ?

मैं तुम्हारा हूँ, रहूँगा, किन्तु बोलो हे अरूपसि !
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

देखकर निस्तब्ध तुमको मैं निरन्तर खो रहा
बीन बजती सुन तुम्हारी साँस की मैं सो रहा
फिर अमा के भाल में सिन्दूर मलते देखकर
चल अपांगों में अनुद्घाटित रहस्योद्वेग भर

पूछ ही तो मैं उठा "तुम प्रकृति, या कुछ और हो ?"
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

सिन्धु के वर सदन से वदनेन्दु-अवगुण्ठन हटा
सृष्टि पर तुमने बिछा दी रूप की शुचि छवि-छटा
तोड़ बेला की परिधि को, चढ़ गगन के मंच पर
कुन्द-हासोज्ज्वल किरण-कण से दिया जग-कंज भर

सिन्धु के रवि-इन्दु, नभ की ज्योति, या कुछ और हो ?
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतनों की चेतना में एक जड़ता है चपल
दीप जलता चेतना का है जड़ों में भी अपल
मोह बनकर त्याग बसता है किसी उर में यहाँ
विष मधुर संवेदना बनकर बरसता है यहाँ
पर बताओ तुम मधुर विष, त्याग, या कुछ और हो ?
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

सच कहो अयि ! कौन हो तुम ? कुलिश में अंगार बन
घन-कलापों में कलापी के हृदय का प्यार बन
जीव का शैशव, युवापन, वृद्ध की मधु लालसा
कल्प तरु, समृद्ध अव्यय, याकि स्वप्निल यह रसा
मरण, जीवन, प्रलय-लय, या सृष्टि, या कुछ और हो ?
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

तुम कही जाती सुरभि, ऋतु का विभाव सुलोचने !
और माया, विश्व की जननी, कि जग मिट कर बने
शून्य के उस रन्ध्र की चिर मन्द्र अक्षर रागिणी
मृत्यु तेरी संगिनी, तुम किन्तु अचल सुहागिनी
पर कहो हे स्वप्न-सी तुम सत्य, या कुछ और हो ?
प्राण की ज्वाला, चिता की राख, या कुछ और हो ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुसंधान-गीत

मेरा स्वर अवरुद्ध तुम्हारे स्वर के अनुसन्धान में
पर तुम तम की चादर ताने पड़ी हुई हो मान में

देख रहा मैं प्रिये ! तुम्हारे कोमल कुन्तल जाल को
औ' कोमल कुन्तल में झलमल गोली मुक्ता माल को
सोंधी-सोंधी बही उसाँसों में जीवन का प्यार भी
कम्पन-कम्पन में उद्‌गारों का पुलकित आगार भी

जब तुम सागर की लहरों पर भरी चांदनी रात में
चलती हो उच्छ्वसित उमंगोंको भर उज्ज्वल गात में
लिए अमिय-मय इन्दु-कलश को करतलपर रख बावरी
चलती हो जब अपने में ही उलझी-सुलझी साँवरी

अधरों पर जब संवेदन की कली विभा की फूटती
विश्व तभी मुस्काने लगता संजीवन - मुस्कान में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौन मर्म के धनु से चलता है जब शर संकेत का
एकबारगी तब भर जाता सूखा उर भी रेत का
सजल तुम्हारी अँगराई में मलयानिल की गंध है
जम्हाई में शीतल चन्दन की ज्वाला भी अंध है
गौरव-अगुरु जलाती तुम जब पश्चिम चरम दिगंत में
बिछ जाती है उसी समय तब धूमिल दीप्ति अनंत में
नन्दन-वन में क्रीड़ा जब तुम करती हो आह्लादिनी
तो प्राची की अधरावलियाँ हो जातीं उन्मादिनी

तुम जब बँध जाती हो अपनी ही सीमा में हारकर
तब मैं अपने को पाता चिर मुक्त तुम्हारे प्राण में
मेरा स्वर अवरुद्ध तुम्हारे स्वर के अनुसन्धान में
पर तुम तम की चादर ताने पड़ी हुई हो मान में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतना—संगीत

तिमिर का मैं एक राही
ज्योति मेरी एक मंजिल
भावनाएँ आँधियाँ बन
राह में घिर मचल छातीं
साधना की वर्त्तिका जल
प्राण को प्रति पल जगाती
चेतना की उर्मिमाला
हृदय को करती समुर्मिल
गगन की अनुरंजना तो
है सदा छलना पथी की
किन्तु कब रुकता अरुण-रथ
रुक न पाता है रथी भी
अर्चना ऊषा सजाती
बिखरता तम-धूम ग्रन्थिल
विश्व को उद्‌बुद्ध करने
मैं मलय का द्वार खोलूँ
निःस्व की श्रम-सम्पदा को
प्रेय जीवन प्रात दे लूँ
सृष्टि के क्षण प्रकृति जाती
है मनोमय पुरुष से मिल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान-मंगल

ज्ञान की मंगल-प्रभा से लोक-दीपित हो
साध पूरी, श्रम सफल हो, सत्य अर्चित हो
दिव्यता प्रत्यक्ष होती व्योम की रवि से
शून्य भी साकार होता पर्व की छवि से
श्रेय-सौरभ से मनुज का ध्येय चर्चित हो
देह मोहिल भाव छोड़ विदेह हो जाए
नीति-कारा-मुक्त, दर्शन-युक्त हो जाए
मानसिक उद्भावनाएँ राग-रंजित हों
लक्ष पंथ, अनेक पंथा लक्ष्य के कामी
सरित-निर्झर धन्य-पावन सरित्पतिगामी
दान जनहित, मान प्रणहित, प्राण जगहित हों
ज्ञान की मंगल-प्रभा से लोक दीपित हो

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौत का धुआँ

गीत मैंने लिखे जिन्दगी के लिए
पर धुआँ मौत का ही मचलता रहा

साधना लक्ष्य की प्राप्ति को ही सभी—
विज्ञ कहते युगों से चले आ रहे
मिट गया पंथ पर जो वही है पथी
शब्द ऐसे गगन में मचल छा रहे

सिन्धु को बिन्दु बन पार मैं कर गया
पर अगम प्यास से कण्ठ जलता रहा

फूल के सौरभों के खिले स्नेह ने
था क्षितिज को दिया एक वरदान-सा
पर क्षितिज ने सजाई चिता फूल की
जल गया फूल निर्धूम निर्वाण पा

मर्म के श्वास का मुग्ध विश्वास था
मुग्ध मुझको मगर मर्म छलता रहा

विश्व के चित्र को, भाव के द्वन्द्व को
जब अमल उर-मुकुर में निहारा कभी
तब मुझे क्रान्ति में भी मिली शान्ति ही
भ्रान्ति-अनुभूति में भी न हारा कभी

थी अमरता खड़ी मार्ग में किन्तु मैं
जिन्दगी के लिए हाथ मलता रहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी से भी न हारा मैं

जिसे तुम ज्योति का वर दो गगन का वह सितारा मैं
हजारों कल्प बीते और बीतेंगे अजाने ही
मगर मैं क्षीण होकर भी मचलता ही रहा हरदम
कि मेरी टिमटिमाहट से जगत ने लक्ष्य को आँका
कि छलने जो चला था हार कर वह मौन बैठा तम
कभी मैंने चराचर को कराए तत्त्व के दर्शन
मगर क्रम आज कुछ ऐसा कि निर्मम बेसहारा मैं
चिताओं की अमरता में सजग मेरी कहानी है
हिमालय पर धवल इतिहास मेरा ही चमकता है
उदधि में दृष्टि की मेरी विरल गंभीरता खोयी
तरंगों में अबुझ उच्छ्वास की संगी चपलता है
कभी मधुमास मेरे हास ने सौ-सौ खिलाए थे
अकिंचन आज मरु के अंक-सा विस्तृत किनारा मैं

[११]

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सितारा हूँ कि औरों-सा प्रलय की व्यंजना भी हूँ
सितारा हूँ कि अरसे से गगन में टिमटिमाता हूँ
मुझे 'ध्रुव' लोग कहते हैं मगर पन्थी नहीं कहते
मगर मैं हूँ अमर पंथी, तभी तो गीत गाता हूँ

भले मानूँ कि श्लथ-गति हूँ, अकिंचन मरु-किनारा हूँ
मगर विश्वास है मुझको किसी से भी न हारा मैं
जिसे तुम ज्योति का वर दो गगन का वह सितारा मैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन का पारिजात

तेरा स्वर गुँजित होता है कुसुमित किसलय की भाषा में
मेरा स्वर मुखरित होता है तेरी ध्वनि की प्रत्याशा में

वसुधा का विस्तार कि तेरी सीमा का लघुतम परिचय है
सुरभित साँसों का स्पन्दन तेरे अन्तर्मन का आशय है
तेरी छाया का बन्दी है अन्तरिक्ष का कोना-कोना
अनिल-अगोचर स्पर्श सदा ही मिट्टी को कर देता सोना

तेरे नयन, नयन प्राङ्गण में मेरे नभ के तारे जलते
मेरा व्योम, कि व्योम-व्यास में जीवन-मरण अकिंचन पलते
एकल तेरा भाव, भाव का उद्वेलन साकार जलधि है
एकल तेरा ज्वार, ज्वार का संवेदन सुखमय सन्निधि है

प्रतिविम्बित होता मेरा अस्तित्व अपरिमित परिभाषा में
तेरा स्वर गुँजित होता है कुसुमित किसलय की भाषा में

कृष्णजीवन भट्ट [१३]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक देश है दूर अलौकिक, हिम-निर्झर सम्भ्रान्त ज्ञानका
एक देश जो पास निकटतर द्योतक जग के स्वाभिमान का
एक देश जो दूर-निकट है, संगम है अज्ञात-ज्ञात का
एक देश जो केन्द्र-विन्दु है, तन है मन के पारिजात का

प्राण-तन्तु पर आधारित इस विश्व-कमल का वह विकास है
नामरूपता जिसकी गति है उसका वह शाश्वत प्रकाश है
उसकी मन्दस्मिति की आभा चिर समाधि है; मोह-मुक्ति है
उसका ही निर्वेद-ज्ञान निर्वाण-ज्योति की सहज शक्ति है

वही शक्ति हो रही दीप्त है मोह मुक्ति की अभिलाषा में
तेरा स्वर गुँजित होता है कुसुमित किसलय की भाषा में
मेरा स्वर मुखरित होता है तेरी ध्वनि की प्रत्याशा में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभी अज्ञात छाया हूँ

न पल्लव में तुम्हें देखा, न फूलों में तुम्हें देखा
मगर मकरन्द में मुझको मिली मधुगन्ध साँसों की
न अन्वेषण किया मैंने, नहीं ऐसा कहीं समझो
युगों से हो रही रचना प्रतीक्षा की उसाँसों की

चला ही जा रहा हूँ मैं, न कुछ अपने लिए प्रेयसि !
बढ़ा ही जा रहा हूँ मैं, मुझे पाना तुम्हें जो है
भले पथ पर कुहासा हो, दिवा-निशि का, रहे जम कर
तुम्हारे अंक का पर्यंक शाश्वत ज्योति का तो है

कभी जल पर, कभी थल पर, अभी अज्ञात छाया हूँ
तुम्हें जानूँ, तुम्हें समझूँ, सुलगतो एक जिज्ञासा
कि मेरा रूप प्राणान्वित प्रिये, तव स्पर्श से होगा
तभी मुझको मिलेगी अर्चना की अल्पना भाषा

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खिचा-सा जा रहा हूँ मैं तुम्हारे द्वार-आँगन में
इसे तुम मुग्धता समझो, नहीं तो मोह ही ले लो
मगर इस अंधकारा के किनारे तुम मुझे कर दो
न कुछ मैं और कर प्यासा, तपन-सन्दोह ही दे दो

विभे ! निष्पन्द मधुऋतु-सा तुम्हारे भ्रू-क्षितिज में मैं
विकम्पित चेतना मेरे अधर के हास-लासों की
न पल्लव में तुम्हें देखा, न फूलों में तुम्हें देखा
मगर मकरन्द में मुझको मिली मधु-गन्ध साँसों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार परिभाषाएँ

कल्पना

कल्पना वही जो शब्दों को अर्थावलि दे
भावाकुल चित्रों को दे अनुरंजना नई
इन्द्रियातीत युग-परम्परा को नव स्वर दे
स्वर को अन्तर्ध्वनि, ध्वनि को अभिव्यञ्जना नई

प्रतिभा

प्रतिभा देती आकार नया सूने नभ को
भूपर उतारती स्वर्ग, शची को, नन्दन को
प्रतिभा दर्शन को प्राणों का अंजन देती
तम को राका, तन को स्पन्दन, गति-लय मन को

साधना

साधना ज्ञान का करती है आलिङ्गन औ'
संघर्ष-निकष पर कसती है जीवन-मणि को
जाज्वल्य सत्य का भाल चूमती, सुन्दर को
वर लेती है, सजती शिव के सिंहासन को

मौलिकता

मौलिकता उद्घाटन भविष्य का करती है
पावस, वसन्त शाद्वल हविष्य बन जाते हैं
अनुभावों की ऊष्मा सुषमा-संबल बनती
हेमन्त-शरद में नाद-विन्दु-कण झरते हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कविता

कविता धमनी का गर्म खून
कविता उन्मादों का प्रसून
कविता नटखट बिजली-बाला
कविता संजीवनी की हाला

यह शब्दों की पटरानी है
यह सरगम भी लासानी है
यह जलन, प्यार का दर्द सर्द
यह आहों का महताब जर्द

यह न्युरोसिस की दवा एक
यह कशिश नीमकश, हवा एक
यह कैन्सर, सेंसर सस्पेंशन
यह बोमा, टेन्सन औ' पेन्शन

यह सोलर सिस्टम का सेन्सस
यह ल्युनेटिक एशिलम कन्शस
यह जन्दावस्ता औ' जहाद
बाइबिल, कुरान औ' इत्तहाद

इसको कोई रोकेगा क्या
झंझानिल को टोकेगा क्या
यह मंजिल, राह नहीं हमदम
यह साहिल, रेतीला मौसम

यह वेद व्यास की गीता है
मरियम, मीरा औ' सीता है
यह, द्यावा--पृथ्वी, सविता है
यह और नहीं कुछ, कविता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति का व्यंग्य-संवाद

मैं शक्ति, मोहिनी की माया, जीवन को दिशा दिखाती हूँ
मेरी साँसों में मृत्यु, अमरता को मैं नृत्य सिखाती हूँ

तुमने देखा है पत्थर को तिरते जड़ता की सरिता में
तुमने देखा चेतनता को बंधते मन की गतिमयता में

तुमने यह भी तो सुना बहुत संसार सदा चलता रहता
आकाश दृश्य, अदृश्य सहज तारों का लोक जला करता

पर भूल रहे तुम आज पन्थ, जब लक्ष्य तुम्हारे चरण तले
किंशुक-स्रग् ही जय-माल कि जब रजनी-गन्धा मँहमँह मचले

तुम कहते, आया सुखद प्रात, स्वर्णिम युग, स्वर्ग धरा पर है
मानवता का अभिसार आज करते शत-शत रत्नाकर हैं

रोने वालों की आँखों के आँसू मोती बनते जाते
कोकिला आश्रमों में गाती औ' प्राण-प्रणव नभ में छाते

पर जलती युग की चिता जहाँ उस जगह सृष्टि संभाव्य नहीं
मैं नहीं मानती उस शिव को जो सत्सुन्दर, अनुभाव्य नहीं

भौतिकता को प्रश्रय देकर अन्विति की सीमा मत बाँधो
मौलिकता को समझो, गुणको परिमाणो में तुम मत आँको

यह विश्व, यहाँ कुछ भी न अकारण होता, मैंने मान लिया
हर परिवर्त्तन की ज्वाला ने आवर्त्तन का शृंगार किया

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर विश्व अकारण नहीं कि जिसका सदा विपर्यय होता है
अनुभव ऐसी आधार-शिला जिसका आधार न होता है

भावना हृदय की जिज्ञासा, स्वर्णदियों का पावन संगम
भावना प्राणियों का संयम, त्रैकालिक जड़-चेतन जंगम

भावना कलाओं की जननी, वह उत्स ज्ञान-विज्ञानों का
भावना अलौकिक दर्शन है, चिर लक्ष्य लक्ष संधानों का

वह सत्य नहीं जो सीमित शम्पाओं में बंधा हुआ चलता
वह सत्य नहीं जो विग्रह का आग्रही हुआ, छलना बनता

वह सत्य नहीं जो करता है संघर्ष मींच के ज्वारों से
यह भी तो सत्य नहीं जो देखा करता मौन किनारों से

यह यज्ञ, और वह दीप-दान, सब मन के भेद बताते हैं
यह वसुन्धरा, वह आसमान, पर प्राण न बाँटे जाते हैं

तो, महाप्राण की छाया में तम भी प्रकाश बन जाता है
नभ नूतन तन आभा पाता, औ' ज्योति-जलधि लहराता है

वह महाप्राण मैं ही, मैं ही आभा की शिखा जलाती हूँ
वह महाप्राण मैं ही, मैं ही चेतन-जग-नीप खिलाती हूँ

मैं शक्ति, मोहिनी की माया, जीवन को दिशा दिखाती हूँ
मेरी साँसों में मृत्यु, अमरता को मैं नृत्य सिखाती हूँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा प्यार

मेरा प्यार अमर है प्रेयसि ! पूनो के आकाश–सा
तेरा आकर्षण-परिरम्भण मधु–मरन्द–उल्लास–सा

मैं चेतन निष्पंद पथिक हूँ, किन्तु न पथ का अन्त है
पीछे शिशिर सिहर रह जाता, आगे सदा वसन्त है

तेरी अँगराई की ज्वाला कलियाँ बनकर फूटती
तू मिल जाती, कौतुक रचता मोहक ब्रज के रास-सा

सपनों के आँगन में करती तू विकीर्ण सुधि-अल्पना
लीलायित जीवन-सम्मोहन ही तेरी चिर कल्पना

तू आयी धरती की सुषमा, सम्राज्ञी की साध ले
मैं तेरा सम्राट सुहागिनि ! नन्दन-वन-मधुमास-सा

मोह कि तेरा मिलन-पर्व है, स्नेह सृजन की छाँह है
विरह कि परिणति है रहस्यकी, विस्मृति शीतल दाह है

प्रीति व्यथा की कथा, प्राण से प्राणों का अभिषेक है
तेरा मेरा जीवन-संगम पनघट के परिहास-सा

मेरा प्यार अमर है प्रेयसि ! पूनो के आकाश-सा
तेरा आकर्षण-परिरम्भण मधु-मरन्द-उल्लास-सा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्यार का पंथी

साधना की सुधि-सुधा पी
तृप्ति की शाश्वत पिपासा को संजोता
प्यार का पंथी—
अजय जीवन–विजेता
पग बढ़ाता जा रहा है

रात ज्यों-ज्यों भींगती है प्रात के संग
दीप त्यों-त्यों ऊँघते हैं वात के संग
पल्लवों के होंठ पर सुधि-लय थिरकती
औ' लता की गोद में कलिका पुलकती
चिर किशोरी कल्पना के
रूप-रस-गुण-सिंधुओं को मुक्त करता
प्यार का पंथी नयन-मन सिक्त करता
छन्द रच-रच गा रहा है

हृदय की तन्त्री किसी की जिन्दगी को
बाँधती है याद की मधु रागिणी में
लोटता कोई विषम-शर ज्यों लगा हो
और कोई डूबता है चाँदनी में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूल को चल उर्म्मियों पर
एक तिनका बन तड़पता, दूसरा मझधार में तो
कमल के लोचन विहँसते,
कुमुद की अनुरिक्तमा लुटती विरह-अभिसार में तो

शाम की वेला सुनहली
प्राण की विश्रान्ति के हित मौन-आकुल
प्यार का पंछी, बसेरा को, विहग-कुल
पर बिछाता आ रहा है

धूल से ये मिल रहे इन्सान, देखो, स्वेद बनकर
साँस उनकी बन रही संजीवनी
और उनकी लालसा उल्लास बन, श्रम-हास बनकर
गढ़ रही है एक नूतन जीवनी
तिमिर ऊपर, तिमिर नीचे, तिमिर से घिर, तिमिर
पथ पर
चल रहे फिर भी लिए अविरामता
चरण उनके चित्र लिखते जा रहे इतिहास-मर्मी
स्वर्ण--किरणों को दिए अभिरामता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रान्त झंझावात सिर पर
दिवस की हर साँस सहमी, तदपि पागल
प्यार का पंथी, धरा का पुत्र मानव
प्राण-घन बन छा रहा है

विश्व के श्लथ बँध रहे विश्वास
निःस्व के सौरभ– सने निःश्वास
चल रही है सृष्टि, वसुमय स्नेह
जल रही है दीप्ति, नभ की देह
पितृवन की शून्यता में
अमर होने के लिए पी मरण का विष
प्यार का पंथी, चिता की राख के मिस
प्यार ही तो पा रहा है
साधना की सुधि--सुधा पी
तृप्ति की शाश्वत पिपासा को संजोता
प्यार का पंथी—
अजय जीवन--विजेता
पग बढाता जा रहा है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभिव्यक्ति-गीत

मेरे गीत चुराए तुमने, दर्द चुरा पाओगे क्या ?
संसृति को वरदान अमरता का तुम दे पाओगे क्या ?

शब्द-शब्द में आकुल-व्याकुल मौन युगों का आवर्त्तन है
स्वर के नभ में मन की नीली समवेदनता का नर्तन है

ध्वनि वितान का, स्वाभिमान का–
एक नया इतिहास यहाँ है,

जीवन को संगीत,प्रीत को परिणति तुम लाओगे क्या ?
मेरे गीत चुराए तुमने, दर्द चुरा पाओगे क्या ?

जन-मानस का अनावरण मैं अपने गीतों में करता हूँ
पराजयी का अभिनंदन विजयी की जीतो में करता हूँ

मौन अर्चना, मुखर भावना–
प्रलय सृष्टि का केन्द्र रसा है.

शान्त गभीर अनल नीरधि पर नीरद बन छाओगे क्या ?
मेरे गीत चुराए तुमने, दर्द चुरा पाओगे क्या ?

समतल पर चंचल गति चलकर सरिता-जल सब पी लेते हैं
किन्तु शिखर पर चढ निर्झर का जीवन कितने जी लेते हैं

अमिय-हलाहल, मन चपला-चल–
कोकिल मदकल प्रिय सुषमा है

'मरण नवल पथ का निर्माता'--यह गायन गाओगे क्या ?
मेरे गीत चुराए तुमने, दर्द चुरा पाओगे क्या ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूप--रागिणी

मुझे दूर से ही पुकारा करो तुम

नहीं चाहता मैं कि तुम चाँदनी बन
पुलकती हुई-सी कभी पास आओ
नहीं चाहता मैं कि उन्मादिनी बन
सुलगती हुई-सी कभी पास आओ
भले स्वप्न की छाँव में ही रहो पर
नहीं बाल मेरे सँवारा करो तुम
मुझे दूर से ही पुकारा करो तुम

नई साँझ बनकर उगो और मिटती–
चलो तुम निरन्तर, यही सिलसिला है
उषा के हृदय का मुकुल सौरभाकुल
हुआ है कभी और मनभर खिला है
इसीसे कहे जा रहा हूँ कि अविरल
विरल भी नहीं अब किनारा करो तुम
मुझे दूर से ही पुकारा करो तुम

अभी जो तुम्हारा प्रिये ! रूप है वह
रहा है निरन्तर, निरन्तर रहेगा
प्रणय खिल पड़ा दीप्त सिन्दूर बनकर
बहा उत्स छवि का, निरन्तर बहेगा
मगर शून्य की आरसी में न यूँ भी
कभी रूप मेरा निहारा करो तुम
मुझे दूर से ही पुकारा करो तुम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीणा में झंकार नहीं है

प्रेयसि ! चाँद-सितारे झूठे, झूठा यह संसार है
सच पूछो, तो कहूँ कि सच्चा एक तुम्हारा प्यार है

पल भर में ही पावस छाता
वन - वन सावन डोलता
विरही के मन में मलयानिल
की ज्वाला को घोलता

औ' पलकों में ही बिजली का करता वह अभिसार है
प्रेयसि ! चाँद-सितारे झूठे, झूठा यह संसार है
सच पूछो, तो कहूँ कि सच्चा एक तुम्हार प्यार है

मधु के दिन में ही मञ्जरियों
के संग अलि गुञ्जारते
सौरभ के सर का सुरूर पी
कोकिल पंख पसारते

क्षण भर को ही छवि की छाया होती स्निग्ध अपार है
प्रेयसि ! चाँद-सितारे झूठे, झूठा यह संसार है
सच पूछो, तो कहूँ कि सच्चा एक तुम्हारा प्यार है

सागर के उर को आन्दोलित
करती है तो पूर्णिमा
दिनमणि के पथ में बिखेरती
ऊषा ही है स्वर्णिमा

वीणा में झंकार नहीं, है, तारों में झंकार है
प्रेयसि ! चाँद-सितारे झूठे, झूठा यह संसार है
सच पूछो, तो कहूँ कि सच्चा एक तुम्हारे प्यार है

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूनम-गीत

चाँद आया अजब भाव से झूम कर
लूट मीठा मजा चाँदनी का
स्वप्न ने स्वर्ग का स्वप्न देखा
स्वर्णिमामय अमा-सिन्धु-रेखा
उर्मिमाला चली, खिल पड़ी कल-कली
कण्ठ फूटा भली रागिणी का
केलि-किल्लोल का लास बिखरा
साँस-पीयूष का हास निखरा
मेह आया निकल, छुप गया हो विकल
प्यार पाकर अमर दामिनी का
आग-अंगार गिल जो रहा छिन
हंस रहा और रो भी रहा छिन
चक्र युग से युगल, वक्र जीवन विगल
चल रहा मान ले यामिनी का
जीवनावर्त्त में पड़ गया जग
फूलकर भूल अपना गया मग
इन्दु ज्यों-ज्यों चला, विन्दु त्यों-त्यों ढला
इन्दुमणि विरहिनी कामिनी का
चाँद आया अजब भाव से झूम कर
लूट मीठा मजा चांदनी का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शरद्-गीत

चाँद न मचलो तुम सागर पर
मचलो जीवन-ज्वार पर
प्राणों के ये कुमुद खिले
हौले - हौले मुस्का रहे
और उमंग तरंगों पर
सुधि-सघन-अमिय-घन छा रहे
आज मचा किरणों का पावस
रिमझिम हर शृंगार पर
चाँद न मचलो तुम सागर पर
मचलो जीवन-ज्वार पर

पवन-हिन्दोले मधु की परियाँ
रश्मि - रेशमी डोरियाँ
दिग्वधुएँ अलसायी आँखों से
गाती हैं लोरियाँ
रजनीगन्धा सुरभि लुटाती
जड़-चेतन के प्यार पर
चाँद न मचलो तुम सागर पर
मचलो जीवन-ज्वार पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मरुवन औ' मधुवन दोनों पर
तुम बरसाते चाँदनी

मादकता की ओढ चुनरिया
संसृति बनी सुहागिनी

और चेतना लहराती है
कोमल किसलय-हार पर

चाँद, न मचलो तुम सागर पर
मचलो जीवन-ज्वार पर

भावों के रीते घट भर आये
शरदोज्वल हास से

बजी प्रेम की मधुर मुरलिका
मानव मन - आकाश से

विश्व मुग्ध हो झूम रहा
समता की सम झंकार पर

चाँद, न मचलो तुम सागर पर
मचलो जीवन ज्वार पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाँद का प्रतिविम्ब

पवन सुरभित कर गई तन-मन, विजन सरिता-किनारे
चाँद का प्रतिविम्ब जल में बन गया सौ-सौ सितारे

मछलियाँ चुगती हुई-सी लग रही थीं मोतियों को
मोतियों-मिस पी रही थीं चाँदनी की ज्योतियों को

देख उनकी लोल लीला अपल मेरे नयन हारे
चाँद का प्रतिविम्ब जल में बन गया सौ-सौ सितारे

धार पर तिरती हुई जब कुछ चलीं नावें उछलती
तो लगा मुझको कि नभ में वारिदावलियाँ मचलतीं

सत्य होते जा रहे थे सृष्टि के चिर स्वप्न सारे
चाँद का प्रतिविम्ब जल में बन गया सौ-सौ सितारे

व्योम का विस्तार अपनी नीलिमा में खो रहा था
दूर मरु की गोद में वह विकल अनिमिष सो रहा था

जा रहा तम का पथी था आत्मविस्मृति के सहारे
चांद का प्रतिविम्ब जल में बन गया सौ-सौ सितारे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्वैत--संगीत

मैं जलूं प्रिय ! बन तुम्हारे दीप की बाती
तुम जलो, संसार को मधु ज्योति का वर दो

चाँद आता जग मगाता बीच नभ में
और आती पूर्णिमा भी है मही पर
पर कहीं सागर उमंगों में तरंगित
और सरिता हो रही बेसुध कहीं पर
सृष्टि के इस द्वैतमय व्यामोह को सुन्दर
तुम अमा की रात में अद्वैतमय कर दो

तिमिर हो जावे तिरोहित, प्रात आवे
स्वर्ण-किरणों का मचे पावस निराला
हर दिशा आलोक-उदयाचल बने औ'
ज्ञान-सौरभ को उड़े मन भृंग-माला
भावना की मंजु-मुकुलित-मूक कलियों को
अर्चनोचित चेतना का शिव-सहज स्वर दो

शून्य के उस पार मन्दिर है तुम्हारा
और मैं इस पार जग की वेदना हूँ
कल्पना की तूलिका से चिर विकल हो
रूप-रचना की अधूरी साधना हूँ
देव ! मायानिल प्रकम्पित प्राण की यह लौ
दो इसे निर्वाण तुम, या स्नेह-कण भर दो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलती लौ एकाकिनी

मैं अपने प्रिय के दीपक की
जलती लौ एकाकिनी

धीरे-धीरे अम्बर मेरे
आँचल में सो जाएगा
मेरा राग चुराकर चुपके
ऊषा का मन गाएगा
खो जाएगा तिमिर लहर-सा
अपने अणु - विस्तार में
आँसू के तारे चू जाएँगे
प्रिय के गलहार में
मेरे स्वर को पा कूकेगी
छाया भी वनवासिनी

सावन का नीरव निशीथ जब
होगा सुध-बुध खो रहा
चकवा-चकई के जोड़ों का
भाग्य सजग हो सो रहा
औ' मलयानिल लौट रही होगी
जब प्रिय के गाँव से
तब मैं हौले गले मिलूँगी
निज सुहाग की छाँव से
ज्यों मधु को पी तृप्त न होती
कोयल भी मधु-भाषिणी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा दीप जले

मेरा दीप जले
औ' प्रकाश तेरा परिचय दे, जग को नहीं छले
मेरा दीप जले

व्योम - विहग कब बँध पाये हैं तिमिर - व्याल - विष - से
बँधा न दिनमणि उससे शोभित सावन - घन जिससे
मौन हिमालय की नस - नस में बिजली दौड़ रही
अमर तारिकाएँ अनादि - पथ से ले होड़ रहीं

क्षिति को जीवन - वरण प्राण को अमरण - किरण मिले
औ' प्रकाश तेरा परिचय दे, जग को नहीं छले
मेरा दीप जले

सुषमा का संसार सलोना वसुधा पर छाए
चाँद चेतना का मुँह चूमे, सागर लहराए
स्वर्ग सृष्टि के सौम्य सर्ग में सुर - सरि - स्वर भर दे
विश्व - भावना को मानव - प्रज्ञा चिन्मय कर दे

अनुमिति हो प्रत्यक्ष, दृष्टि हो दिव्य, सुमेरु चले
औ' प्रकाश तेरा परिचय दे, जग को नहीं छले
मेरा दीप जले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्दिन के दिन हुए गुलाबी

सखि है ! दीप जलाओ !!
पुलकाकुल रसमय पलकों की गागर को छलकाओ !!
आओ, दीप जलाओ !!

तारे गूँथें, हार बनाएँ, तुनुक पवन का तार सजाएँ
जन-जन के मन-मन में बाती-स्नेह-सदृश हम प्यार जगाएँ
ज्यों ऊषा मुस्काती, तम के आंगन में, मुस्काओ !
सखि हे ! दीप जलाओ !!

तम का सावन घिर आया है, ज्योति-बिजलियों की छाया है
आँखों-आँखों में मँडलाती एक अलौकिक ही माया है
सीप खुले साँसों की, मुक्ता हासोज्ज्वल बरसाओ !
सखि हे ! दीप जलाओ !!

अनुरञ्जित इस मधुमय क्षण में, एक उमंग नई भर मन में
भर दो ज्योति-सुरभि, पञ्चम स्वर, संसृति के सूने नंदन में
दुर्दिन के दिन हुए गुलाबी, जीवन - नीप खिलाओ !
सखि हे ! दीप जलाओ !!

पुलकाकुल रसमय पलकों की गागर को छलकाओ !
आओ, दीप जलाओ !!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसे दीप जलाऊँ ?

आँखों में भर आँसू, उर में ज्वाला लिए अतीत की
कैसे दीप जलाऊँ ? कोई बोलो, जीवन - ज्वार पर

'अन्धकार से मुझे उजाला समझो!'—सब कहते रहे
और अहिंसा की कोरी भावुकता में बहते रहे
पर, न अन्धेरा दूर हृदय के कोने का भी हो सका
देवालय को चला कदम, पर गिरजे घर में जा रुका

दीप जलाने वालो ! दीवाली का क्या इतिहास है ?
बोलो, धरती पर क्या सम्प्रति नहीं दनुज की लाश है ?
जो मानव के छद्म-वेश में मानवता को लूटता
अन्धकार की आड़ जरा भी मिली, कि उन पर टूटता

अगर बात है ऐसी, तो तुम सुनो, कान को खोलकर
दीप जलाने के पहले चलना होगा तलवार पर
आँखों में भर आँसू, उर में ज्वाला लिए अतीत की
कैसे दीप जलाऊँ ? कोई बोलो, जीवन - ज्वार पर

दीप जलाना कभी न होवे द्योतक क्षण - आवेश का
क्योंकि नहीं यह अवसर केवल कर्म-योग-उपदेश का
इसको कोई समझ न लेना कवि की कोमल भावना
जो प्राणों को सदा प्रदीपित करे, वही यह साधना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शंकर - रामानुज का उलझा हुआ न यह अध्यात्म है
यह तो मानवता के ज्ञानी का सुन्दर सर्वात्म है
नहीं अपेक्षा इसको आशा, श्रद्धा औ' विश्वास की
बाँध न सकती परिधि इसे है चिर सूने आकाश की

इसका तो आलोक अमर, जो कभी न मरना जानता
सदा किरण के बीज उगाता मरघट, बस्ती, द्वार पर
आँखों में भर आँसू, उर में ज्वाला लिए अतीत की
कैसे दीप जलाऊँ ? कोई बोलो, जीवन - ज्वार पर

एक यही है जो साथी-सा है पथिकों के पन्थ का
औ' माधुर्य प्रचुर प्रेयसियों की है पीर अनन्त का
किसलय - कुसुमों की लाली है, मरु - अन्तर की आग है
शान्त शून्य के सूर्य - रन्ध्र से सदा प्रवाहित राग है

विश्व इसी आलोक एक से करता निज अभिषेक था
वर्ग - श्रेणियों में विभक्त होकर भी जब यह एक था
किन्तु आज यह बिलकुल वञ्चित है विकसित आलोक से
तभी इसी से घिरा हुआ है रजस्तिमिर से, शोक से

दीप जलाने वालो ! पहले तुम मिट्टी को आँक लो
तभी जलाओ दीप कि तुमको सोना है अंगार पर
आँखों में भर आँसू, उर में ज्वाला लिए अतीत की
कैसे दीप जलाऊँ ? कोई बोलो, जीवन - ज्वार पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देशवासियो ! दिया जलाओ

देशवासियो ! दिया जलाओ अब अपने प्राणों का
राष्ट्र मांगता है यौवन अब तेरे बलिदानों का

स्नेह - दान का अर्थ न्याय की रक्षा भी होता है
'हिन्दू - चीनी' - 'भाई - भाई' - संदेशा खोता है
तुमने जिसको सत्य - अहिंसा की विशाल आँखें दीं

वही आज बन बैठा दुश्मन तेरे सम्मानों का
देशवासियो ! दिया जलाओ अब अपने प्राणों का

नेफा से भारत माँ ने है तुमको आज पुकारा
ढोला चौकी और थागला है सर्वस्व तुम्हारा
रँगने दो अपनी मिट्टी को अपनी आहुतियों से

एक नया इतिहास बना दो पंचशील - मानों का
देशवासियो ! दिया जलाओ अब अपने प्राणों का

भारतीयता फिर चमकेगी राणा और शिवा की
जाग उठेगी त्याग - आग लक्ष्मी - दुर्गाबाई की
समरांगण के सीमांचल पर स्वर्ग उतर आएगा

जन्म - भूमि को मिल जाएगा अम्बर वरदानों का
देशवासियो ! दिया जलाओ अब अपने प्राणों का

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिशाकाश विजयी आह्वान

जय भारत ! जय देश महान !!

युग - युग से जिसके गौरव का जग करता आया गुण - गान !

शतलज जिसका आँचल धानी

विन्ध्या जिसकी दीप्त कहानी

कुरुक्षेत्र न्यायालय जिसका, ज्योति - पर्व उसका हिमवान !

वीर शिवा की कर्म - भूमि यह

पंचशील की जन्म - भूमि यह

क्रान्ति - ज्वाल पर चढकर हमने किया शान्ति का हर अभियान !

बलिदानी संगर सुभाष का

भगत सिंह बादल विनाश का

नेह नेहरू का, गाँधी का, दिशाकाश विजयी आह्वान !

सत्य कवच है, धर्म चक्र है

मुकुट अहिंसा, त्याग शस्त्र है

निमिष मात्र में किया युगान्तर, लक्ष्य-वेध औ' अरि-संधान !

जय भारत ! जय देश महान !!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहराता है अमर तिरंगा

लहराता है अमर तिरंगा सच्चाई की शान से
पल में ही हल हो जाती है हर मुश्किल इन्सान से

नींव पड़ी है तेरे बाज़ू पर ही तेरे मुल्क की
न्याय मिटा देता है हस्ती दुनिया से हर जुल्म की

कैद नहीं भारत की मिट्टी सह सकती अब राह में
आजादी अब टक्कर लेगी हर आँधी - तूफ़ान से

सत्य - अहिंसा से रौशन है चमन हमारे देश का
दुश्मन चुरा नहीं सकता है अमन हमारे देश का

अमन बाँटने हम आये हैं दुनिया के इस बाग में
लाल किला को हमने सींचा है अपने बलिदान से

आसमान भी बोल उठेगा अब हमलावर कौन है
सारी धरती डोल उठेगी जो सदियों से मौन है

बर्फीली चट्टानें बरसेंगी चीनी दीवार पर
नेफा औ' लद्दाख, साथ में, तिब्बत लेंगे मान से

लहराता है अमर तिरंगा सच्चाई की शान से
पल में ही हल हो जाती है हर मुश्किल इन्सान से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आजादी की लहर हमारी तरुणाई है

आया नया विहान साथियो ! आया नया विहान है
प्राण-प्राण में भरी उमंगें, मुखर मुक्ति का गान है

रोमांचित हो रहा देश है रसभीनी बरसात में
मीठी खुनकी जगी हिमालय के बर्फीले गात में

फूल-फूल से खुशबू का सन्देशा उड़ा बयार में
हरियाली का आँचल चूमा रवि-किरणों ने प्यार में

नभ के जलते तारे कहते–'जिन्दा हर बलिदान है'
आया नया विहान साथियो ! आया नया विहान है

बढने वाले बढते, कदम बढाते हैं अभिमान से
लड़ने वाली तलवारें झंकार उठातीं म्यान से

शक्ति तौल कर देश भक्ति का परिचय देते धीर हैं
रण-प्रांगण में दमन शत्रु का क्षण में करते वीर हैं

आजादी की लहर हमारी तरुणाई है, शान है
आया नया विहान साथियो ! आया नया विहान है

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राष्ट्र - ध्वज की नींव सींच दो

राष्ट्र - ध्वज की नींव सींच दो शत्रु - रक्त - फव्वारों से
माँ का आँचल भर दो वीरो, दुश्मन के संहारों से

क्रान्ति अहिंसा की पुकार है, क्रान्ति मित्रता का बल है
क्रान्ति शान्ति की परिभाषा है, क्रान्ति सृष्टि का संबल है
क्रान्ति दिशाओं का नर्तन है, अन्तरिक्ष की हल-चल है
क्रान्ति सिद्धियों की जननी है, क्रान्ति विश्व का मंगल है
ध्वनि आती यह लाल किला से और शहीद - मजारों से

हमने व्रत था लिया अहिंसा का, आजादी पाने को
अब तो उद्यत हैं दुश्मन के नाको चने चबाने को
घर में बैठे अँगरेजों की सर्प - कुण्डली तोड़ी थी
गोआ की पृथ्वी श्रृगाल - सा पुर्तगाल ने छोड़ी थी
अबकी तोपों का जवाब देना ही है बमबारों से

स्वार्थ - नीति के लाक्षागृह का गुंबद - गर्भ जलाना है
युद्ध - भूमि में बडवानल के ज्वारों - सा लहराना है
चीनी दीवारों की चौड़ी छाती को भड़काना है
शम्पा का स्यन्दन, अणु-रथ, अरि-खाण्डव पर दौड़ाना है
शान्ति - दूत हम सजे - धजे प्रतिरक्षा के हथियारों से

नेफा की खाई पाटो अब शत्रु - सैन्य के मुण्डों से
सीमा - रेखा का निर्माण करो असुरों के पिण्डों से
उमड़ रहे जो चीनी कीचक - दल भेड़ों के झुण्डों - से
उनका वंश - ध्वंश करो झट, राष्ट्र चक्र औ' झण्डों से
प्यास मिटाएगी रण - चण्डी गर्म लहू की धारों से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो न तनिक उदास !

राही ! हो न तनिक उदास, हो न तनिक उदास !
प्रगति जीवन है, अगति में मरण है का वास !

व्याधियाँ जकड़ा करेंगी पाँव, बन जंजीर
आँधियों की तूलिका भरती रहेगी पीर
किन्तु जग विहँसा करेगा पा अलौकिक हास !

वेदना से मुखर हो, या मौन जीवन - सिन्धु
लक्ष्य हो प्रत्यक्ष, चाहे आग उगले इन्दु
पुरुष कर लेता सदा है परिस्थिति को दास !

छाँह डालेगी क्षणिक तेरे गले में बाँह
'आह !' निकलेगी, न निकलेगी कभी भी 'वाह !'
प्राण का स्वागत करेंगे अमिय - हासोल्लास !

टूटता है, टूटने दे प्रलय का आधार
तू चले, जब तक न टूटे दिवस-निशिका प्यार
दीप जलता है सदा ले तम-शिखा-उच्छ्वास !

सामने हो जो अजाने साधना की रेत
राख मंजिल की बनेगी अमरता - संकेत
चेतना के अधर पर होंगे अमित मधुमास !

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंग तिरंगा ला रहा

बढो जवानो ! धर्म - क्षेत्र में कर्म तुम्हारा बुला रहा
हिम्मत को आँधी में दुश्मन अपनी पीठ दिखा रहा

फड़क उठे भुजदण्ड खण्ड करने को दुश्मन मुण्ड को
दड़क उठी धरती दफना देने को दस्यु - दरिन्द को

बलदाऊ हलधर ने तोला अपने भुज के फाल को
कुचल-मसल कर डाल दिया है हिंसानल के व्याल को

भारत की जनता की एका देखी पाकिस्तान ने
पैटन टैंकों का खलिहान बनाया हिन्दुस्तान ने

बारूदी पैगाम मौत का दुश्मन के सर छा रहा
बढो जवानो ! धर्म - क्षेत्र में कर्म तुम्हारा बुला रहा

वीर शिवा की शान बुलाती तुमको सीमा - पार से
सौ प्रताप की बाँहें फड़कीं तोपों के मुख - द्वार से

अरि - कुल के हौसले बढ़ाकर खट्टे कर दो दाँत को
टुकड़े - टुकड़े कर बिखेर दो शैतानों की आँत को

भारत की मिट्टी को छूने वालों को संहार दो
कब्र बनाकर उसी जगह पर जिन्दा उनको गाड़ दो

अमन - चैन के पहरेदारो ! स्वर्ग जमीं पर आ रहा
बढो जवानो ! धर्म - क्षेत्र में कर्म तुम्हारा बुला रहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छम्ब और अखनूर हमारी आँखों की है रोशनी
इनकी रखवाली करने वाले हैं किस्मत के धनी

पूंछ क्षेत्र की खड़ी खाइयों को दुश्मन से पाट दो
चींथ-चींथ कर उनकी लाशों को गीधों को बाँट दो

और जौरियाँ में जौहर बेजोड़ तुम्हारा होड़ ले
बने नया इतिहास सूरमाओं का, नूतन मोड़ ले

अगवानी के गीत सिन्ध भी आज अचानक गा रहा
बढो जवानो ! धर्म-क्षेत्र में कर्म तुम्हारा बुला रहा

संगीनों से खेल रहे हैं दीवाने कश्मीर के
चुकने वाले नहीं कभी ये लक्ष्य-वेध रणधीर के

आजादी को पहनाते ये बख्तर हैं बलिदान का
दुनिया लोहा मान रही है शान्ति-दूत की शान का

रण-विराम का स्वांग रचाकर देते हैं जो धमकियाँ
हम भी लेंगे साँस, उड़ाकर उनकी धज्जी-धज्जियाँ

शत्रु-राष्ट्र के संग जंग में रंग तिरंगा ला रहा
बढो जवानो ! धर्म-क्षेत्र में कर्म तुम्हारा बुला रहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिमालय का आह्वान

जागो वीरो ! पहरेदारो ! आया पर्व महान है
दिशा-दिशा में आज हिमालय का गूँजा आह्वान है

बढना है तुमको बर्फीले अंधकार को पार कर
दम लेना है दुश्मन के सीने को छिन्न-दरार कर

गाज गिराकर हल करना है मुश्किल को, तूफान को
प्राण निछावर कर रखना है आजादी की शान को

जननी-जन्मभूमि-रक्षाहित मिट जाना ही धर्म है
अंगारों पर चल विजयी होना ही तो अभियान है

जागो वीरो ! पहरेदारो ! आया पर्व महान है
दिशा-दिशा में आज हिमालय का गूँजा आह्वान है

तेरी साँसों में बसती हैं प्रलयंकर चिनगारियाँ
उड़ जाएँगी जिनसे लाखों चीनी गोलाबाड़ियाँ

तेरी आवाजें खंजर हैं, प्यास भयंकर ज्वाल है
मदमस्ती से भरी तुम्हारी करवट में भूचाल है

लांघ न जाए मानसरोवर दुश्मन, जागो साथियो !
एक-एक रणधीर देश का ज्वालामुखी समान है

जागो वीरो ! पहरेदारो ! आया पर्व महान है
दिशा-दिशा में आज हिमालय का गूँजा आह्वान है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ की गोद न सूनी होने पावे दुश्मन - द्रोह से
मौन त्याग की ज्यादा कीमत है ममता औ' मोह से

आज मौत का ही महत्त्व है, किन्तु युद्ध की भूमि में
मृगराजों की शोभा बढ़ जाती है रण की धूलि में

माँ की मांग सजे सिन्दूरी सौरभ - विजयोल्लास से
माँग रही माँ सीमाओं पर शक्ति-मुक्ति-बलिदान है

जागो वीरो ! पहरेदारो ! आया पर्व महान है
दिशा-दिशा में आज हिमालय का गूँजा आह्वान है

यह अनार्य औ' आर्य जातियों का कलुषित संग्राम है
राष्ट्र हमारा विश्व - दीप है, वैदिक सेवा - ग्राम है

भस्मासुर को क्षार करो औ' रक्षा निज आर्यत्व की
पंचशील का स्वर्ग बचाना महिमा है वीरत्व की

'माओ - चाऊ' जरासंध - कुल का आमूल विनाश हो
क्रान्ति स्वयम्वर शान्तिदूत का करे, यही संधान है

जागो वीरो ! पहरेदारो ! आया पर्व महान है
दिशा-दिशा में आज हिमालय का गूँजा आह्वान है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीमाञ्चल पर होली

चलो जवानो ! सीमांचल पर होली का त्योहार है
यही हिमालय का संदेशा, शिखरों की हुंकार है

पंचशील का शील मित्रता को तन - मन - धन दे देना
पंचशील का शील शत्रु - कुल को गीता - अर्जुन देना

पंचशील का शील कृष्ण का चक्र, पिनाक पिनाकी का
पंचशील का शील अमर इतिहास बहन की राखी का

बड़े-बड़ों के दाँत हुए खट्टे कृपाण - झंकार से
केसरिया से सच्चाई का करना फिर शृंगार है

चलो जवानो ! सीमांचल पर होली का त्योहार है
यही हिमालय का संदेशा, शिखरों की हुंकार है

असुरों ने थपकियाँ लगाईं, बजे स्वर्ग के दरवाजे
अँधियाले में पड़ीं सुनाई ज्यों शृगाल की आवाजें

पर प्रचण्ड मार्तण्ड शौर्य का आज दहकने वाला है
'मोहन - रेखा' पर संवत्सर नया लहकने वाला है

जो अशान्ति का, स्वार्थ-क्रान्ति का दमन-शमन संहार करे
वीरों के गौरव - ललाट का वही क्षार अभिसार है

चलो जवानो ! सीमांचल पर होली का त्योहार है
यही हिमालय का संदेशा, शिखरों की हुंकार है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहनो ! आज महावर छोड़ो

बहनो ! आज महावर छोड़ो, युद्ध महा वरदान लो
महाकालिका रण - चण्डी बन लक्ष लक्ष्य सन्धान लो

विस्फोटक टंकार निकाला करतीं तेरी चूड़ियाँ
तुझ से पाती नई जिन्दगी वीर धर्म की रूढियाँ

तेरे भ्रू की ज्वाल - शिखाएँ गढती जलती क्रान्तियाँ
तेरे बाजू मिटा दिया करते दुश्मन की भ्रान्तियाँ

महिषासुर के द्रोही वंशज दूर गुफा से झाँकते
हो जाओ आरूढ सिंह पर और हुताशन - बाण लो

बहनो ! आज महावर छोड़ो, युद्ध महा वरदान लो
महाकालिका रण - चण्डी बन लक्ष लक्ष्य सन्धान लो

नहीं द्रौपदी, नहीं जनक - तनया की कोई बात है
नहीं स्वयम्वर, नहीं चीर हरने की कलुषित रात है

हम तो इसको पंचशील की अग्नि - परीक्षा जानते
दुर्गा - लक्ष्मी - संरोजिनी की शौर्य्य - वीरता मानते

एक - एक आहुति होती है मर्यादा की रक्षिका
कार्त्तिकेय को विजय-तिलक दो, अरि - भंजक धनु तान लो

बहनो ! आज महावर छोड़ो, युद्ध महा वरदान लो
महाकालिका रण - चण्डी वन लक्ष लक्ष्य सन्धान लो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रांति की आँखें

शहीदों को नहीं छेड़ो, उन्हें खामोश सोने दो
नहीं तो क्रान्ति की आँखें तुम्हें बेचैन कर देंगी

मजारों के अगर बाहर उन्हें आना पड़ा तो वे
खुले आकाश के नीचे गमी के फूल देखेंगे

चलेंगे तो चुभेंगे पाँव में काँटे गरीबी के
वतन की जिन्दगी को वे बहुत गमगीन देखेंगे

सुनेंगे बुलबुलों के गीत गीले वे यहाँ आकर
तड़पते पंख में होगी बँधी मासूम आजादी

चमन के हाल पर उनको तरस खाना पड़ेगा तब
सताएगी उन्हें उनकी शहादत की करुण आँधी

लगेगी ठेस तब दिल को, झरेंगे आँख से आँसू
तुम्हारे त्याग की सीमा उन्हें बरबस रुलाएगी

शहीदों को नहीं छेड़ो, उन्हें खामोश सोने दो
नहीं तो क्रान्ति की आँखें तुम्हें बेचैन कर देंगी

सुनो, सोए हुए आजाद भारतवर्ष के वीरो !
करो तैयारियाँ तुम शान्ति की खातिर शहादत की

हृदय की अतलता को तुम बनाओ शान्ति की स्याही
विजय की वैजयन्ती से लिखो सत्कीर्ति भारत की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही स्वातन्त्र्य के संग्राम का आदर्श - दर्पण है
जहाँ मुस्कान माँ की तुम सहज ही झाँक सकते हो
नहीं तो आज भी मंजिल नहीं है सामने तेरे
न उज्ज्वलतम भविष्यत् को कभी भी आँक सकते हो

'शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले'
मगर माँ तो फटा आँचल तुम्हें हरदम दिखाएगी
शहीदों को नहीं छेड़ो, उन्हें खामोश सोने दो
नहीं तो क्रान्ति की आँखें तुम्हें बेचैन कर देंगी

शहीदों के मजारों पर महज मेला लगाकर तुम
न समझो यह कि तुमको आज तो करना यहीं तक है
तुम्हें तो पीड़ितों की पीर के अंगार पर चलकर
सुधा की वृष्टि करनी सतत अम्बर से मही तक है

सुनो, ओ कर्णधारो ! देश के, खिलवाड़ मत करना
लगाकर महज मेला तुम शहीदों की शहादत से
तुम्हें तो बन्धुता के बीज बोकर शान्ति के जल से
बढ़ाना है यहाँ औ' दूर- रहना है नफासत से

तभी अमरावती की सृष्टि भारत - भूमि पर होगी
तभी तो राष्ट्र - बापू की तपस्या मुस्कुराएगी
शहीदों को नहीं छेड़ो, उन्हें खामोश सोने दो
नहीं तो क्रान्ति की आँखें तुम्हें बेचैन कर देंगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नया सबेरा आ रहा

देश हमारा चढा जवानी की चोटी पर जा रहा
और एशिया के आङ्गन में शान्ति - सुधा बरसा रहा

उर में अङ्गारों - सी पीड़ा पाले दीर्घ अतीत की
पिघल - पिघल कर विकल पहरुआ वृद्ध हिमालय गा रहा

माना, उदजन की निष्फलता बतलाता ललकार कर
और अहिंसा सदा विजयिनी, हिंसा बैठी हार कर

पर इतने से सृष्टि न होती भारत भू पर स्वर्ग की
स्वतन्त्रता को सदा अपेक्षा राम - राज्य के सर्ग की

जिसकी स्याही उष्ण - अश्रु - जल, स्निग्ध हँसी का रंग हो
सागर ही क्या, रेती पर भी मणि - मय अगम तरंग हो

तभी अन्धेरा रख सकता अपने निर्मम हथियार को
और मचल कर किरण कहेगी "नया सबेरा आ रहा"

उर में अङ्गारों - सी पीड़ा पाले दीर्घ अतीत की
पिघल - पिघल कर विकल पहरुआ वृद्ध हिमालय गा रहा

ज्ञानवान् जब होगा मानव आत्मरूप - सा विश्व का
तभी निहित कल्याण सबों का, मानवता का (निःस्वका)

मिट जाएँगे स्वप्न, मिलेगी 'सो ऽ हम्' को साकारता
मन मसोस कर रह जाएगी जीवन की निस्सारता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पीछे पाँव हटाना होगा जड़वादी विज्ञान को
दुखियों के संग रोना होगा अतिचेतन भगवान को

अगर नहीं तो फूंक चुका मैं, सुनो, प्रलय की भैरवी
और समझ लो 'शिव' के कारण शिव का ताण्डव छा रहा

उर में अंगारों - सी पीड़ा पाले दीर्घ अतीत की
पिघल - पिघल कर विकल पहरुआ वृद्ध हिमालय गा रहा

माना, देश हमारा जग में अपने ढंग का एक है
पर 'सोने की चिड़िया' अब यह नहीं रहा, व्यतिरेक है

दूध - दही औ' घी के बदले नदियाँ बहतीं पाप की
खिलते काले कमल, जरूरत जिन्हें नहीं रवि - ताप की

नभ को नीलापन से धोती धूम - घटा नरमेध की
शोषण - शर से कोशिश की जाती है जीवन - वेध की

ऐसे में रोना आता है शिवि--दधीचि के नाम का
जिसका बोया बीज देश के आङ्गन में लहरा रहा

उर में अंगारों - सी पीड़ा पाले दीर्घ अतीत की
पिघल - पिघल कर विकल पहरुआ वृद्ध हिमालय गा रहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्सान ही है ईसा

इन्सानियत का मजहब दुनिया में सबसे न्यारा
इन्सान ही है ईसा, ईश्वर, रहीम प्यारा

कुदरत में लहलहाता नूरे - अमन उसी का
हर जिस्म मुस्कुराता बनकर चमन उसी का

मौजों की गोद में भी तैरा किया किनारा
इन्सानियत का मजहब दुनिया में सबसे न्यारा

हर फर्ज में उसी की रंगीन दास्ताँ है
हर प्यार में उसी का संगीन वास्ता है

शामो - शहर उसी के आलम का है नजारा
इन्सानियत का मजहब दुनिया में सबसे न्यारा

जिन्दा यहाँ वही जो बनकर मशाल आया
हर होड़ - इम्तहाँ में बन बे - मिसाल छाया

जिसकी शहादतों से रौशन जहान सारा
इन्सानियत का मजहब दुनिया में सबसे न्यारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन्दगी-मौत की लड़ाई

किसी के नयन में भरा खार - पानी
किसी की हँसी का ठिकाना नहीं है

बढ़ा आँधियों को छुपाता हुआ जो
जमीं आसमाँ को मिलाने की खातिर
उसे कौन पूछे कि 'तुम कौन ? क्या हो ?
कहाँ का सफर यह तुम्हारा ? मुसाफिर !'

पिये घूंट पर घूंट जाऊँ जहर मैं
जिये मुफ्त में वह, जमाना यही है

दिये टिमटिमाते हुए जल रहे हैं
हजारों, मगर लौ नहीं - सी मचलती
समाँ छा रहा, पर उदासी लिए ही
उगा चाँद आता, निशा मौन ढलती

लुटा आशियाना लुटा ही रहेगा
जली राख को अब जलाना नहीं है

उठे जोर का एक तूफाँ उफन कर
बचे एक भी गम - खुशी का न किस्सा
जहाँ जिन्दगी - मौत की हो लड़ाई
वहाँ कौन, किसका, सुने कौल - किस्सा

मिटा जो नहीं, है उसी को मिटाना
मरे को, मिटे को, मिटाना नहीं है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिट्टी का गीत

हरियाली में डूब रहा सारा - का - सारा गाँव रे
जैसे दिन पर पड़ी रात की चन्दा वाली छाँव रे

दिग्दिगन्त में फैल रही है
धूप रुपहली, समाँ सुनहला
लहराते संगीत प्रीत के
मँडलाता है जीवन पहला

धरती के ऊपर - ही - ऊपर ग्रामीणों के पाँव रे

आज शरद् ने ली अँगराई
औ' गदराई सुखद वात है
सिहर - सिहर कर गात पुलकता
ज्यों सुहाग की मधुर रात है

खुशहाली में तैर रही है साँस - साँस की नाव रे

काँपती कोमल कदली नीचे
औ' लहराते चञ्चल अञ्चल
घिरती जाती बदली ऊपर
व्याप्त गगन का नीलम समतल

आज अचानक ही अग - जग के उमड़े पड़ते भाव रे

डोल रही है सींक धान की
ऊँगुलियों की पोर - पोर में
सिमट रहा लावण्य वन्य मधु
अवगुण्ठन की कोर - कोर में

मिट्टी के पहलू में उमँगे मानव के सब चाव रे
हरियाली में डूब रहा सारा - का - सारा गाँव रे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसन्त-संगीत

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा,
स्वागत है नव वर्ष हे !!

पीत प्राण के कल किसलय पर मधुमय हो तव सञ्चरण
नव जीवन का लोभ, लोभ का करे न कुछ भी सम्वरण

कुसुमों के रसमय जीवन के
उपवन के आदर्श हे !
स्वागत है नव वर्ष हे !!

स्वप्न सत्य हो मानस-मरुवन के रोमाञ्चित पंथ पर
किरण प्रेरणा की विकीर्ण करते आओ ध्रुव अंत पर

पुलकाकुल पीयूष-पर्व तुम,
तरल गरल-दुख-दर्श हे !
स्वागत है नव वर्ष हे !!

उपल चपल हो दूर्वाओं का पावन प्रणय-पयोद पा
मदिरालस अम्बर का अन्तर वसुन्धरा की गोद पा

श्याम शिलीमुख-सुख, मलयज-लय,
कोकिल मदकल हर्ष हे !
स्वागत है नव वर्ष हे !!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसंत - स्वगीत

मैं वसन्त का मधुर समीर हूँ
प्राण - गन्ध गान - छन्द - बन्द में सजा रहा

खुल पड़े अशोक के मुँदे नयन
मुक्त चंचरीक के बँधे चरण

आम्र - ताम्र - पत्र वैजयन्तिका
कूकती तरंगिनी अवन्तिका

सृष्टि की सहज सरोजिनी खिली
दिव्य दृष्टि, ज्ञान-वृष्टि का विहान आ रहा

मैं वसन्त का मधुर समीर हूँ
प्राण- गन्ध गान - छन्द-बन्द में सजा रहा

ऋद्धि - सिद्धि की समृद्धि हो रही
श्रेय - प्रेय को मही सँजो रही

आर्ष सभ्यता जगी वनान्त में
आर्य - भाव लोक वक्ष - प्रान्त में

व्योम - तूर्य प्रणव - पूर्ण हो चला
पारिजात का पथी प्रणय - प्रगीत गा रहा

मैं वसन्त का मधुर समीर हूँ
प्राण - गन्ध गान-छन्द-बन्द में सजा रहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसन्त-सुषमा

आज मेरे ही नहीं, सबके नयन-घन
लाल होते जा रहे-से लग रहे हैं।

देखते ही बन रही है मधुरिमा मधुमास की
भावोर्मियाँ हर प्राण-मन की
खो रही सुध-बुध, दशा फिर भी निराली
मुग्धता भी मुग्ध है अनजान तन की
स्वर्ग का लावण्य बिखरा पड़ रहा है
भू-परी अभिसारिका-सी लग रही है
या कहूँ, अनुकूल अम्बर के नयन की
बावरी हो तारिका-सी लग रही है

सो चुके थे जो कभी के भाग्य सबके
आज वे मधुमय मुकुल-से जग रहे हैं

सृष्टि-वीणा में मलय लय भर रहा है
ताल देती मंजरी मंजीर बन कर
और भ्रू की धनु-लता से चल रहे हैं
तीर सौरभ के प्रणय-जंजीर बन कर
कूकती कोयल नहीं, यह सनसनाहट
तीर सौरभ का चला जो, है उसी की
सज रहीं वन-वीथियाँ, कुंकुम लरजते
बज रही अनुरागिणी वंशी खुशी की

मधुर अधरों के सुकोमल पल्लवों की
पी सुधा मधुकर चपल दल भग रहे हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नये वर्ष की रंगोली

रस बरसाने लगी चमन में तेरे मन की बात, प्रिये !
मौसम पुलकित हुआ, चाँदनी भी गदराई, रात, प्रिये !

जख्म जला देने से, सुनता हूँ, भरने लग जाता है
गर्म खून के उग आने से सर्द दर्द मुरझाता है
आओ, हम अपनी आहों की मौन होलिका - दाह करें

नये साल की अगवानी करने आई मधुवात, प्रिये !
रस बरसाने लगी चमन में तेरे मन की बात, प्रिये !

जड़ीभूत पौधों ने अपने वल्कल सकल उतारे हैं
जीर्ण घृणा के केंचुल सदियों से जो हमने धारे हैं–
आओ, उन्हें उतार चलें हम, कलुष - कालिमा को मेटें

छँटे कुहासा, छुटे मुहासा, खिल जाए जलजात, प्रिये !
रस बरसाने लगी चमन में तेरे मन की बात, प्रिये !

आसमान के स्याह तख्त पर तारों की रंगोली हो
सूरज की बारात सजे औ' शाम बनी हमजोली हो
झूम उठे दिनमान गुलाबी मदहोशी की शोखी में

अमिय - किरण की स्वर्गङ्गा में नहलाए हर प्रात, प्रिये !
रस बरसाने लगी चमन में तेरे मन की बात, प्रिये !

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होली - पंचम

उमड़ पड़ी रवि की किरणों - सी दीवानों की टोली रे
उछल - कूद सब रस बरसाते, करते हँसी - ठठोली रे

प्यार भरी पिचकारी ने
उन दीवानों को पुचकारा
औ' फूलों की दुनिया में
मधु उड़ा रहा है फव्वारा

किसने कोयल के मदकल में आज मिसरिया घोली रे
उमड़ पड़ी रवि की किरणों - सी दीवानों की टोली रे

अम्बर ने धरती के गालों
को गुलाल से रँग डाला
नगर प्यार का बना समन्दर
डगर बनी है मधु - शाला

आया ऋतु का राजा, आया, लिए अबीरा - झोली रे
उमड़ पड़ी रवि की किरणों - सी दीवानों की टोली रे

कुंकुम - अबरख आदि उड़ाते
दीवाने सब हैं गाते
झुण्ड बाँध कर चले आ रहे
झूम - झूम कर मदमाते

बीच वाट में कान्हा लपके, लिपटी राधा भोली रे
उमड़ पड़ी रवि की किरणों - सी दीवानों की टोली रे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होली : एक चित्र

कलियों ने मुस्कान लुटाई, अलियों के अरमान खिले
झूम - झूम टुक झुकी टहनियाँ, तने - तने को गान मिले

धीर हुए आकुल - अधीर जो, तो विरही के क्या कहने
एक - एक कर सभी उड़ानें आज लगे रह - रह भरने

वृद्ध जनों के अंग - अंग में भी उमंग की रँगरलियाँ
नन्दन - वन से क्या कुछ कम है, अरे, भुवन - वन की गलियाँ

चन्दन - वन से रज - कण उड़कर हिम से मिलने आज चले
कलियों ने मुस्कान लुटाई, अलियों के अरमान खिले

केसर - क्यारी बीच त्रिसुध तरु - तरुणों ने ली अंगराई
मँह - मँह मर्मर कर भर आयी प्रेयसियों की अमराई

आज कोकिलों ने भी 'कू - कू' की पिचकारी भर ली है
अमृत की वर्षा की है औ' मन भर होली खेली है

चेतन की क्या बात ! जड़ों के उर के भी पाषाण हिले
कलियों ने मुस्कान लुटाई, अलियों के अरमान खिले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसंत - संगीत

अलियों ने कलियों के घूंघट को खोल - खोल
चूम लिया चारु चरम रूप - राशि को अमोल

उन्मन मन बाँध रहा मन्द - मन्द छन्द - बन्द
आम्र - बौर की सुगन्ध पर अमन्द हो विभोर

आया चञ्चल वसन्त, बिखरा कल स्वन अनन्त
दिग्दिगन्त में नई उमंग की छई हिलोर

कूक रही कोयल अलसाई अमराई में
माँग रही जैसे कुछ मधुर - मधुर बोल बोल

यौवन वन - कानन में, नयनों में, आनन में
कोमल आमन्त्रण पर मचल - मचल झाँक रहा

अम्बर के पुलिनों से हिमकर भी किरणों से
प्राणों के सागर को पुलक - पुलक आँक रहा

नयनों से परिमल-जल पी-पी जी भर-भर कर
जीवन की लहरों पर डोले मन डोल - डोल

अलियों ने कलियों के घूंघट को खोल - खोल
चूम लिया चारु चरम रूप - राशि को अमोल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्यार भरा गुंजार-गीत

मुस्काती प्रकृति सुकुमारी उड़ा गुलाल - अबीर अपार
जड़ जो चेतन हो आया है, बार - बार है रही निहार

बहुत दिनों के बाद आज फिर फूलों पर छाया सुरूर है
अलियों का कलियों के उर पर प्यार भरा गुंजार प्रचुर है

मधुऋतु मधुमय मंजरियों से जीवन का करती शृंगार
मुस्काती प्रकृति सुकुमारी उड़ा गुलाल - अबीर अपार

मलयाचल से मचल - मचल कर आग लगाती हवा चली है
भरी सभा में सिहर - सिहर कर नाच रही कचनार कली है

धरती का आँचल भर आया देख गगन करता मनुहार
मुस्काती प्रकृति सुकुमारी उड़ा गुलाल - अबीर अपार

कोयल कूक रही व्याकुल हो, हूक बनी अब राग - रागिणी
लगता सागर पर मँडलाने को आयी है चाँद - चाँदनी

फूट पड़ा कोयल का मदकल, बरसों का संचित उद्‌गार
मुस्काती प्रकृति सुकुमारी उड़ा गुलाल - अबीर अपार

आज सुरभि की मादकता पीकर नर - नारी लिपट रहे हैं
मदिर भोर में मद - विभोर आमोद - लहर सब लूट रहे हैं

और पुरुष भी उन्मन नयनों से बरसाता पागल प्यार
मुस्काती प्रकृति सुकुमारी उड़ा गुलाल अबीर अपार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रमर - गीत

सुमन - सुमन पर गुनगुन गाकर प्यार जताने वाले
मन की बातें जान - जान कर उड़ - उड़ जाने वाले

गले - गले मिल कर सुमनों से जब-जब मादक बातें होतीं
हौले - हौले, चुपके - चुपके तब - तब स्नेहिल घातें होती

मलय - पवन के हर झोंके पर घिर - घिर आने वाले
सुमन - सुमन पर गुन - गुन गाकर प्यार जताने वाले

प्यार - भार से नत रहने वाले के सँग लोलुपता कैसी
आत्म - समर्पण करने वाले के सँग उच्छृंखलता कैसी

झूम - झूम रस चूम - चूम कर अधर कँपाने वाले
सुमन - सुमन पर गुन - गुन गाकर प्यार जताने वाले

मौन सुरभि के चल अंचल में मदिर नींद जब आ जाती है
ऐसी मोहिल आकुलता में सबकी सुध - बुध खो जाती है

कलियों की गलियों में मदकल टेर लगाने वाले
सुमन - सुमन पर गुन - गुन गाकर प्यार जताने वाले

फूलों के प्यालों में संचित आसव को जब पी जाते हो
पता नहीं लगता है मर-मर कर भी तुम कब जी जाते हो

रजनी में सजनी के सँग - सँग रास रचाने वाले
सुमन - सुमन पर गुन - गुन गाकर प्यार जताने वाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निराला - नीराजना

शिव सूर्यकान्त शारद सुन्दर
चिर शिखर-पुरुष, पौरुष-गिरिवर
अभिनव तुलसी औ' नवोन्मेष सन्धानी

अर्चना ऋचाएँ ऋजु विराट
कुंकुमित कर गईं दिक्कपाट
परिमल बिखेरता बढा जभी अभियानी

छान्दोग्यों का पुनरावर्त्तन
सन्दर्भों का शुचि सम्वर्द्धन
गीतिका - रीति - कारा - विमुक्त मधुवाणी

कुत्सा - कुण्ठाएँ रहीं दूर
वीरासन के अवतार - शूर
करुणा - नीराजन, शुचि, अशेष वरदानी

संघर्ष - हुताशन में निकाय
सम्वृद्ध, सर्वभृत, चरितदाय
चल, विफल, विक्लवी दुरभिसन्धि पाषाणी

साधना, पंथ को कर प्रशस्त
संदीप्त कर गई रुचि समस्त
युग की आत्मा को दिव्य दृष्टि अनुदानी

प्रायोगिक अन्तस्तल समग्र
ऊर्जस्वित अवचेतन निरभ्र
भावोष्मा भी बन गई राष्ट्र -- कल्याणी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जवाहरलाल !
कितने लाल हैं पैदा हुए तुम से

समय का रथ बढा आगे, विजय के सारथी, जागो
तमिस्रा का निविड़ गह्वर मिटा,ज्वाला-पथी, जागो

त्वरित अवतार लेकर नेहरू, तुम नेह बिखरा दो
समर की भावना को एकता का राग सिखला दो

तुम्हारे पाटली पुरुषार्थ का संकेत पाने को
तुम्हारे परिमली व्यक्तित्व का श्रम - गान पाने को

तिरंगा फहरता जाता, कि सागर शोक में डूबा
दिशाएँ पड़ गईं नीली, उदासी में गड़ी ऊषा

सभी माना किये आदेश निर्मल नीति - तन्त्री का
अखिल संसार को तुमने दिया संदेश मैत्री का

अभी तक राष्ट्र - कुल भी चल रहा आदर्श को लेकर
समस्याएँ जटिल - संकुल सुलझतीं शील को छूकर

जले ये शून्य में नक्षत्र टिमटिम कर रहे जितने
तुम्हारी भूमि में हैं शरण पाते धर्म हैं उतने

युगान्तर क्रान्तदर्शी चेतना के तुम पुरोधा थे
मनुज के श्रेय की सम्वर्द्धना के एक होता थे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन्होंने ज्ञान पाया है यहाँ के पेड़ - पौधों से
हमें वे शेर नकली हैं डराते युद्ध - बोधों से

मगर हम साधना को ही सदा बल मानते आये
निखिल भू-व्यास को तव 'शील' से ही बाँधते आये

अजन्मे काल की विकरालता जिह्वा डुलाती है
जगत् - संजीवनी में स्वार्थ - हिंसा विष मिलाती है

कहीं संसार विप्लव - क्रोड़ में पड़ पिस नहीं जाये
कहीं ब्रह्माण्ड अणु - संघर्षणों में छिप नहीं जाये

जवाहर लाल, कितने लाल हैं पैदा हुए तुमसे
बढेगा गर्व - गौरव देश के दिनमान का उनसे

प्रलय की कालिमा की सुगबुगाहट मेट लेने को
हिमालय - सा मुकुट के लाल, भारत के यती जागो

समय का रथ बढा आगे, विजय के सारथी, जागो
तमिस्रा का निविड़ गह्वर मिटा, ज्वाला-पथी, जागो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नई कविताएँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अफीम का पेड़

पागल मरुभूमि में
बौना - सा, काला - सा पेड़ एक,
पतली - सी काया है, पीली - सी छाया है,
दौड़ता ही रहता वह पेड़ एक,
रेंगता ही रहता है सरपट वह पेड़ एक,
दुपहर की पीली - सी धूप ही जिसकी हैं डालियाँ,
झाँई के पत्तों में खिलतीं अदृश्य जहाँ रेशमी कुमारियाँ,
शून्य में ही जिसका है आल - वाल—
वैसा वह पेड़ है अफीम का,
उसकी ही मादक नशीली - सी गन्ध यह सभ्यता।

यह सभ्यता बनती बारूद है,
देती घर फूंक है,
देखती तमाशा है जलता जब संस्कार।

यह सभ्यता अजगर की बेटी है,
जिसका विष दूर से ही चढता है जादू - सा।

इसके भी दाँत हैं, पर हैं वे बे - असर,
इसके भी आँखें हैं आविष्कृत म्युजियम;
नाक राजनीति है;
साँस कूटनीति है।

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसका मुँह ज्ञान - योग - शाला है,
खाती परिमाणहीन जीवित परमाणु यह,
पीती कुहासा है, जो कि छा जाता है—
अन्धकार बन भविष्य - जीवन पर
वर्त्तमान रह जाता खँडहर - सा,
जिसका है सिंह - द्वार द्वारहीन,
सर - वर कुलीन जहाँ मीन - हीन,
ऐसा क्यों ?
पूछते हो ?
ऐसा है इसलिए कि सभ्यता को प्यार है
प्राण - युक्त छाया से, देह - हीन काया से.....
ऐसी यह सभ्यता !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिच्छू का पेड़

कंकालों का खड़ा हिमालय,
नर - मुंडों का बना हिमालय,
आज मौत की लू लगने से सर्द पड़ गया,
मानो, बिच्छू काट खा गया, जर्द पड़ गया।

नहीं एक ही बिच्छू केवल आज हिमालय तलहटियों में,
बिच्छू के अनगिनत पेड़ लहलहा रहे,
झड़बेरों के काँटे भी खिलखिला रहे,
आज हिमालय तलहटियों में।

हौले आया नया जमाना,
पहन हाथ में गीले लोहे का दस्ताना,
बढा कि तोड़े अमृत की अधजली कली, अधझरा फूल वह
बिच्छू के अनगिनत पेड़ से,
पर खंजर का शिरस्त्राण धर माथे पर,
संगीनों को संजाफों के संग सनाहों को कसकर
अपने मासूम कलेजे से,
पहन मोमजामा ऊपर से,
पश्चिम का तूफान बर्फ का बागवान
ले रहा मोर्चा, देखो, नये जमाने से।

यह बिच्छू का पेड़
कि जिसकी छाया में छटपट करती शान्ति।

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह बिच्छू का पेड़
कि जिसको हिंसा में प्रतिहिंसा खामोश,
अहिंसा का ठंडा है जोश ।

यह बिच्छू का पेड़
कि जिसकी गोद में पड़ा सत्य बेहोश ।

इसके पत्ते पीले, सहज कटीले, रस से हरे - भरे,
इसकी डालों में कपास की कोमलता,
पर डालों के अन्दर पत्थर की जड़ता;
जड़ता, जिसकी छाया में कितने साम्राज्य पले - झुलसे,
स्याह पड़ गई भूख - प्यास की मारी पगली आजादी,
हवा बँध गई :
कण्ठ हो गया रुद्ध मानवों की जीवन - सुषमाओं का;
ऐसा ही आ गया समय है,
बोधि - सत्व की जड़ की कोई बात नहीं ।

नई योजनाओं का आज तकाजा है,
नये सिरे से अब काँटों की खेती हो ।
उर्वर वसुधा—
नयी चेतनाओं के पौधे जहाँ उगाये जाते थे—
जल जाये औ' रह जाये वह रेती हो ।

इसीलिए तो बिच्छू के पेड़ों की छाया लरज रही
काँटों की खेती करने को;
इसीलिए तो नई योजनाओं की छाया लरज रही
मुर्दों की खेती करने को !

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फूल बटन - होल का

फूल बटन-होल का माना कि प्लास्टिक है,
इसकी पंखुरियों में
निर्जन मन अँटका ले, ऐसा मकरन्द नहीं,
मौसम है, किन्तु मौसम का भ्रामक छल - छन्द नहीं,
न उड़ते-से आंचल की बहकी परिछाईं का मीठा - सा शोला,
न कजरारी आखों का आकर्षण,
न भौंहों के तिरछे अन्दाजों का मधु नर्तन ।
फूल बटन - होल का
धरती की रेतीली छाती पर जैसे हो ओयसिस,
आदमी की छाती पर लहराता फूल बटन होल का,
इसके मधुकोश में उड़ जाए, ऐसी तो गन्ध नहीं,
मानो, आत्मा की खुशियाँ लहराती हैं ।
इसकी इकाई में पल से पलायन की वृत्ति सिमट जाती है,
इसकी जुन्हाई है माया का अवगुण्ठन,
वन्ध्या तरुणाई है मधुरेता प्राणी की कुण्डलिनी ।
फूल बटन - होल का सुन्दरतर गमले के फूल से,
इसलिए कि गमले का फूल झरने को खिलता है ।
फूल बटन - होल का मसृणतर कागज के फूल से,
इसलिए कि कागज का फूल क्षण की रंगरेली का दुल्हा है ।
तो, फूल बटन-होल का ऐंटिक पेपर पर एक पीठ छपा हुआ
टी. बी. का नुस्खा, या ऐटम का चित्र नहीं,
यह मुर्दे अरमानों का वैयक्तिक मेला है;
नकली मुस्कानों से असली व्यक्तित्व का सौदा है;
दाह - संस्कार के बाद की राख पर तुलसी का पौधा है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घोंघे का शिकार

शुतुरमुर्ग के पर फैलाकर
उड़ी एक दलदल की चिड़िया : चाहा चिड़िया ।
नीचे दलदल दड़क रही है,
ऊपर नभ में तडिल्लता भी तड़क रही है ।
अन्धकार बिखरा पड़ता—
लगता ऐसाकि मुक्तबुद्ध का शून्यवाद साकार हो रहा ।

ज्ञान-पुंज के मानसरोवर में तिरते
सम्प्रदायगत स्याह जंगली बत्तखों के छद्म बगूले ।

बन्द हो गई मांद शेर की
और सिंहिनी की सड़कों पर सिंह तानकर
चलते हिरन हिरनियों के संग अनुशासक बन ।

लो, मोची का नौकर करता आखेट,
अग्निवाण के अनुसन्धानक 'राजहंस' को लगी आज है—
ला - इलाज मिरगी की मगर - चपेट ।

आज घटोत्कच भीम - पुत्र के रक्त - द्रोह से
विश्व भर रहा, न्याय मर रहा,
घड़ियाली आंसू के अंगीठों में जलकर
भस्म हो रहे भव्य मीष्म के दाय,
घोंघे जो करते शिकार हैं !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरगिट का शिकार

आसमान का रंग न कोई,
कहते–उसका रंग कपट है,
ढंग और आकार न कोई—
पर पृथिवी तो लगी उसी से पुच्छहीन गिरगिट जैसी है।
अन्य ग्रहों में आग देखकर जली आज यह
अपना बल खो, असन्तुलित हो।
लेने को चल पड़ी आज है स्वर्ग-राज्य यह।

यह शिकार तो उपग्रहों के दुस्साहस का परिचायक है :
तर्कस से ही टक्कर लेता, देखो, तर्कस का सायक है।

उद्भिज की तो बात अलग है,
स्वेदज भी करता अजस्र है आज पिण्डजों का शिकार।

डोल रहा ब्रह्माण्ड कठिन जो कूर्म - पृष्ठ - सा,
डोल रहा ब्रह्माण्ड तरल
जो प्राणहीन, जीवानुपूर्ण कच्चे - अंडे - सा किसी विहग के।
उपग्रहों के जीवन का है यही स्रोत :
उमड़ पड़ा काफिला देखलो कुंठाओं के घोंघों का
करने को खुल कर शिकार मन - प्राणों का,
चिन्तन भी फाँसी - घर बन करता शिकार मन-प्राणों का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरा गुलाब

मेरे गुलाब की ललौंही कली से
स्वर्ग का विश्वास - मुख झाँकता है;
मेरे गुलाब के आबदार किंजल्क से
चेतना के पराग - स्फुलिंग होते हैं विकीर्ण;
किन्तु इन स्फुलिंगों का उपबृंहण
आत्मा की जड़ता को क्षार कर,
घृणा को प्यार में परिवर्त्तित कर,
प्राण-सिन्धु-घाटियों के उदात्त किनारों को मिला, मिट जाता है।

जल्पनाओं के आधार पर जीने वाले,
भावनाओं की स्मृति मात्र के सहारे,
दार्शनिक इतिहास के क्षणों को पी सकते हैं,
जी नहीं सकते।

मानव की निर्लिप्त हड्डियाँ दर्शन की उत्स हैं;
हड्डियों से गुँथा हुआ माँस
इतिहास की शाश्वत - नवीन प्यास है।

रात को रात का जन्मा जब सो जाता,
स्वप्न का शिशु जब स्वप्न में ही खो जाता,
दिन का उजाला जब दिन को ही गो जाता,
तब हर एक ऐसा पल एक नए प्रलय की सृष्टि
और एक नई सृष्टि का प्रलय कहा जाता है;
ऐसे ही क्षण में मेरे गुलाब की ललौंही कली से
स्वर्ग का विश्वास - मुख झाँकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीन बन्ध

(१)

युग-बन्ध

दुनिया ?
मेवा-फरोश, आज है नकाबपोश।
मौसम की मुंगिया उँगलियों में
इसने रचाई है बिजली की मेंहदी
जिसकी गुलाबी औ' रंगरूट आभा से
नीला - सा, पीला - सा सागर का संदिग्ध आसमान
लाल हुआ जाता है :
रत्निल अवतंसों से ध्वंसिल विकासों का मनना महोत्सव है।

चढने को आया दिनमान शून्य के सरसब्ज बाग में
पड़ती सुनाई हैं जोरों की मुर्गों की बोलियाँ,
माथों पर उमड़ी कलंगियाँ, शाम गई, आई सुबह नई···

जादूगर मेहरे : धरती के सेहरे :
मैक्बेथ जीत हार कर शहीद हो गया।

सर्फ 'जिन्दगी' हुई,
किन्तु बर्फ - सा हिमाल दिल हुआ बाहर से,
भीतर तो जलती अमानत है दुनिया की :
मौर्फिआ, मौर्फिआ, मौर्फिआ·····!

देख लो—
रौशन जहान है,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमा का व्याकुल मन - पारावत हौले कुछ बोलता,
लौह - युग, प्रस्तर - युग, धूमाकुल वाष्प - युग - बन्धों को
अपने आदर्शों के स्वच्छन्द पंखों पर तोलता।

सगबग अवचेतन के मोखों से
चेतन - अचेतन - उपचेतन की लाखों शिकायतें झाँकतीं –
जैसे कुछ गिलहरियाँ दौड़तीं
पावस - अमावस की रातों में, जामुन के जर्जर बगीचों में !

(२)

प्राण – बन्ध

सन्तुलन :
जीवन को मृत्यु का संबल मिल जाने पर
खोए एहसासों को दिल के पहलुओं में भरने के बाद
उन्मन उन्मादों के भोले अवसादों के लघु क्षण मिल जाएँ तो
सन्तुलन प्राणों को यूँ ही मिल जाता है।

अनुक्षेप :
स्वप्निल स्वर मनके अनुभावों के व्यंजनको दुलराते,
पुलकाकुल अणिमा की काया हो जाती है,
द्विधा को निश्चिति की परिचितियाँ,
उलझन के आंगन में बाँध - बाँध
सूर - श्याम को अनंग - आसंग - रंगों में देखकर
लाज - भरी भाषा में सो जाती–
ऐसे में लघिमा की गरिमा जग जाती औ'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्षेप अपने विस्तार का मस्तक विशाल कर, उन्नत कर,
प्रक्षेपण को पुकार,
प्रणव - सिद्ध शब्दों को जाग्रत कर देता है।

उद्भास :
अन्तर्मन की अनादि स्वीकृतियाँ
निर्मल विभावों को, संभव अनुभावों को
गहरी सुधि - स्मृतियों के साये में
दत्तक सन्तानों - सी अर्पित जब होती हैं,
परिभाषित आत्माएँ पातीं जब उज्ज्वल उद्भूतियाँ,
खुलते तब बन्द द्वार : प्राण - बंध - प्रालेय - व्योम - व्यास,
इसको ही कहते उद्भास हैं;
यह तो कुछ और नहीं, प्राण - बंध, प्राण - प्रतिष्ठा है।

(३)

विश्व – बन्ध

मेरा तन एक वाद्य यन्त्र है,
जिसको छू देने पर,
कोमल मन - प्राणों के तारों पर
गूँजता संगीत आत्म - दर्शन का,
दर्शन की परिधीतर - चित्रोपम नर्त्तन - मधुशाला में,
चिंतन - आवर्त्तन में
नर्त्तक का नृत्य स्वयं नर्त्तक ही देख लिया करता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरे ही सपनों के आंगन में
भावाकुल अन्तस् के संकुल दुकूलों को उर्म्मिल कर,
प्राणों के चिन्मय उन्मादों को
पुष्पित - प्रफुल्ल तेज - पुंजों से गुंफित कर,
मौन पौन दोले पर—
विश्व - बंध परिमल - विकास ग्रहण करता है ।

मेरे ही सपनों के आंगन में
एक नया विश्व ग्रहण करता सन्दर्भ है ।

नया विश्व :
नीलम का नीलापन,
नीले समन्दर में द्रवित नहीं होता है ।

नया विश्व :
मुक्ता का मुक्त रंग,
शुक्ति - कोष - अंकों से
निसृत हो, प्रसृत हो, संस्कृत हो
रूप - रस - गंध - स्पर्श - तेजोमय क्षण में हो जाता है ।

नया विश्व :
युग का संस्पन्दन है;
प्राणों का क्रन्दन है;
कुरुक्षेत्र प्रांगण में–
ज्ञान - अंध अर्जुन के वन्दन का करता अभिनन्दन है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रणव - पुत्रों की शोभा - यात्रा

मेरे आंगन के सहनों - ओसारों पर
एक भी छत नहीं,
एक भी कोठरी नहीं,
और एक भी वल्ली नहीं;
फिर भी रश्मि–भूमि पर समाधि की अल्पनाएँ बनती हैं,
ज्योति - स्तूपों पर निर्मित हो जाता है एक विशाल महल,
जो सामने से त्रिकोणाकार,
बायीं ओर से पद्म- सम्पुट - सा,
दायीं ओर से सिंहासन सा,
पीछे से चेतना के उच्छ्वसित सागर-सा प्रतिभाषित होता है ।

कोई जाये सागर के पार,
करले कुण्ठित अपने आधुनिक मनु को,
हो जाये अपस्मार का शिकार,

मेरे पीछे आने वाले प्रणव - पुत्रों की शोभा - यात्रा को
करना है संजीवन दान, विकसेंगे विश्वसित प्राण,
होगा संदेहों का संवेदन, मिलेगा शाश्वत समाधान;
धरती बनेगी ऊर्जस्वला, प्रकृति होगी रजस्वला;
अवतरित होंगे सहस्रों युग - पुत्र,
जिनके ललाट से प्रस्फुटित होगी वाणी की दीप - शिखा,
जिनके युग्मांसों से प्रसूत होगी
एक सूर्योदयी परा परम्परा··· ··· ···।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्वासा का शाप - भंग

आश्रम का आंगन,
मृगराजों का समाज,
उर्वर उपत्यका,
स्वप्निल अधित्यका,
ऐसे में मृगराजों का सौतेला भाई
बाल भरत गिनता है खूंखार पूर्वजों के दाँत;
क्योंकि ये प्रतिभा के दुश्मन
अपने ही मल से करते हैं अमृत - सर - आँगन को अमल,
खिलने देते नहीं प्राण - परिमल - कुल - आकुल चल कमल ।

होगा दुर्वासा का शाप - भंग;
शकुन्तों की पुत्री शकुन्तला का पुत्र
ऐसे विष - पशुओं का लौह - द्रोह विगलित कर
उलूक - तंत्र अहं के दर्पाभ दर्पण को चूर्णित कर
सर्प-वलय-बल-सीमोल्लंघन कर मौलिक परम्परा को देगा जन्म
जो रीते आदर्शों के सूने आकाश में
लगाएगा चार चाँद, बिछाएगा नई चाँदनी
जिससे प्रवाहित होगी—
ऐतिहासिक संवेदना की वरेण्य आयुष्य की दार्शनिक नई धारा,
तभी समझ लेना—
कि हो गया दुर्वासा का शाप - भंग,
कि हो गया परम्परा का आश्रम पवित्र ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवता को चुनौती ?

तूने मन्दिर के द्वार से ही
देवता को चुनौती दी है ?
किन्तु,
नासमझ मानव !
तेरे अन्तर में
जिस भगवान ने
मुझे,
उनको,
उन लताओं को,
इन पहाड़ियों पर फैले हुए पौधों को
निर्झर - सा देवत्व दिया है,
जिसने मानसरोवर पर
महाकाल शंकर की नृत्यलीला की सृष्टि की है,
जानता है, वह कौन है ?
नहीं ?
तो सुन ले–
वह तेरे पूर्वजों का तुझ से भटका हुआ संस्कार है
जिसे तूने केंचुल की तरह उतार फेंका है
और एक अपराधी की तरह दूसरे केंचुल को पैदा नहीं किया,
वरन् विषैले दाँतों को जमाने की चेष्टा की है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू उत्तमर्ण नहीं, अधमर्ण है,
अपने को पहचान द्वार से ही,
अन्दर भी तू ही है,
यह मन्दिर तेरी ही छाया है,
किसी क्षय के रोगी की क्षीण काया नहीं।

तू भ्रम का आकाश अपने मन के व्यास पर से हटा दे,
जला डाल इस भ्रम के भूरे भदेस को
किसी बौद्ध सम्राज्ञी की अहम्मन्यता की तरह
और जन्म दे एक 'अन्यता' को
जो व्यापक हो, किन्तु कुण्ठित लघु मानवीयता नहीं,
सृष्टि हो, किन्तु बिटनिक पीढ़ी की
सुलगती हुई रीढ की फटती हुई हड्डी नहीं;
प्राणी हो, किन्तु कलख के कफन के नीचे,
दफन होती हुई संक्रान्ति नहीं,
अपितु निर्निमेष दीप्ति हो आत्मा की।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सीता : कुंठाओं की माता

देवदूतो ! देखलो भू नासिका से तुम,
कि तेरे भूत की उपलब्धि का घोड़ा,
चला जो दिग्विजय करने, गया पकड़ा ।

लव सामने आया भविष्यत् का,
उपसर्ग की चिकनी लगामों को लगाकर वह बढ़ा आगे,
अपवर्ग में प्रेतिल दिवंगत पूर्वपुरुषों के होश ठंडे हो गये ।

अकल के दाँत लक्ष्मण के सभी जागे,
झड़ गये विषदन्त,– प्रत्यय खो गया,
हो गये क्षत - क्षार अनुभव वंचना के,
मानसिक युग - धर्मिता की यातना के ।

भाग अपना ले लिया,
लव मात्र भी छोड़ा नहीं लव ने,
गुणन - फल हुआ तभी आसान,
राम ने भी टेक कर घुटने रख दिये अविलम्ब तीर - कमान :
दूर पुरातन हुआ मूल्य का,
आया नवल विहान· · · ·

० ० ० ० ०

वाल्मीकि की रामायण को मिली मुक्ति की सीता,
और राम से मुक्ति पा गयी कुंठाओं की माता ।

कृष्णजीवन भट्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज का आदमी : एक परिभाषा

मेरे संजीवन - उद्यान के सक्रिय द्वार पर
लकवा का मारा, लकलकाता हुआ सर वाला
एक गूंगा - बहरा
खूबसूरत जवान - बूढ़ा पहरा दिया करता है,
उसे न देखने वाला ही दार्शनिक है,
उसे न जानने वाला ही स्वस्थ जिज्ञासु है।
उसके मीठे स्पर्श में आते ही
संसार कामला का शिकार हो जाता है;
उसकी तेजाबी आँखों के मीठे पानी से
राख हो जाता है इस्पाती इन्सान भी,
जलजला छा जाता है फरिश्तों की दुनिया पर भी,
और वहाँ रहने वाले भी हो जाते हैं खूंखार।
तो वह है—
यान्त्रिक भीष्म - शय्या पर जगा - सोया हुआ
एक हविश का पुतला,
जो बना हुआ है महान;
वही है आज का आदमी, या इन्सान।

●

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मौसम के स्वागत में

मौसम के स्वागत में मेज का फूलदान खाली है।
पारदर्शी खिड़कियाँ भूल रहीं
श्वेत प्रेत - छाया - सी,
किरणें समन्दर से निकली हैं
पारद की माया - सी।

अन्धकूप डूब रहा अपने ही पानी में,
छलता शृंगार - बॉक्स सबको जवानी में।

कीटों का मस्तिष्क ज्योतिष्क - पिण्डों - सा जलता है –
चूँकि अँधियाला है :
ऐसे में अन्तावशायी भी बनता मसीहा है।

ऋतुओं का दीपक समन्दर - सा खारा है;
बाती का अन्तरीप न्यारा है।

अंडस की बात नहीं—
यदि मौतका खुशनुमा अंटाघर दुनिया है;
इसीलिए मौसम के स्वागत में
अन्तराल - दिग्विहीन डेल्टा से
मैंने अकेले ही पतझर की डोंगी को बाँधा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षितिज - रेख सिन्दूरी

बादल छँट जायेंगे,
नभ निदान डूबेगा एक नई आभा में,
ऋद्धि - सिद्धि से प्रबुद्ध होगी प्रगल्भ बुद्धि,
धूम - जाल - सा विकीर्ण होगा मालिन्य - सिन्धु,
ऊहा को भेदेगी क्षितिज - रेख सिन्दूरी ।

गत अनेक सदियों की,
मौन बदाबदियों की,
कुण्ठा की लाश - तले सोयी - दबी मजबूरी
पारकर जायेगी क्षितिज रेख सिन्दूरी ।

आशा की मधुगन्धा गोधूलि
फैलेगी विद्युत की विच्छुरित साँसों - सी;
विष विषाद का,
सड़ाँध की कुहेलिका मिटा,
लक्ष पर्व के सुधांशु की तरी संजोयेगी क्षितिज-रेख सिन्दूरी ।

नवयुगीन अणुओं को आत्मसात
औ' विलीन कर अभेद्य परमाणु - कुण्डों को,
परम चरम सत्ता - इयत्ता के अंजन से लिपटेगी,
दौड़ेगी चन्दन - वन से,
पलास - आंगन से गंध,
मन्थर गति कस्तूरी : क्षितिज - रेख सिन्दूरी !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्धनारीश्वर का पोस्ट-मॉर्टम

मैं अजन्ता की गुफाओं में भटकती एक आत्मा,
नग्नता मेरी किया करती स्वयम्वर खँडहरों का;
भग्नता दैहिक समय की वासना की जीभ को जलती हुई खुजली।

योनि में सीमित रही औ' गर्भ में शंकित बसी मैं;
गुम्बदों की धड़कनों में छाँह को मण्डित किये खण्डित गड़ी मैं;
मैं अघट सौन्दर्य की परिदेवना हूँ,
और, क्षण की साधना से दूर,
शून्यगामी स्तब्ध, चेतन वर्जनाएँ
[काल - मूर्च्छित ज्यों जरासन्धी भुजाएँ]
हर कहीं हैं दौड़ जाती;
मूक सागर - ज्वार - सा अपलक अलख निशिदिन जगाती।

नहीं भूमा - मन मुझे उलझा सका है,
नहीं अणु - मन की समस्याएँ विपश्चित हो सकी हैं,
किन्तु सुनती आ रही मैं–
सभ्यताएँ सैन्धवी - दुर्दान्त,
गह्वरों, सोपान - कुण्डों में विघूर्णित - छिन्न,
अर्धनारीश्वर बहुल का पोस्ट - मॉर्टम कर रही हैं।

❁

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरी आत्मजाएँ

मैं श्रावक हूँ;
मेरी चिन्तनाओं का आँचल
खुला - खुला पड़ता है,
जिन्हें कोई बाँधे हवाओं से,
करदे विश्रृंखल संयम की यातना से;
जिनकी अमावसी मांगों को
पावसी इन्द्र - धनुष - रंगों से रंजित भी कर दे,
और इन्हें करदे सुहागिन;
क्योंकि ये षोडसी हो आई हैं ।

ये चिन्तनाएँ हैं;
इनकी सीमाएँ हैं;
श्रुतियों की माँएँ हैं;
मेरी आत्मजाएँ हैं ।

★

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीली पिपासा : तेजस् का बाढ़वान

उन्मद जिज्ञासा की बहुमुख अट्टालिका
रक्तिम विरागों से निर्मित हो आयी है,
अवसर - अवकाशों के मुस्तकिल दरवाजे,
अरसे - जमाने से बन्द शब्द - दरवाजे खुलते अब जाते हैं।

फैल रहा मध्यम स्वन मानस - संगीत का
जीवन - वन - प्रान्तर के शबनमी साये पर।

नन्हें विश्वास को
हैरत के आंगन में, द्विधा के दर्पण में प्रतिविम्बित देखकर
'सोऽहं' की अभिधागत अनुभूति जगती है;
मौन प्राण - झरने से तन्मय उच्छ्वासों की जल - धारा
अन्तर से होती निरन्तर प्रवाहित है।

चेतना,
अभाव के,
मानस - तनाव के मुखपर जड़ देती है—
निमिष - युग - मन्वन्तर : कल्पों का अभ्यन्तर।

श्रद्धा औ' करुणा के स्वप्निल उद्गारों से
आलोड़ित - जाग्रत है सुधि की मन्दाकिनी,
डूब रहा जिसके किनारे पर गोलोक - ध्रुवतारा;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसमें निमग्न हैं उन्मग्न भावों के सागर,
विभावों के व्याकुल - प्रशान्त महासागर भी ।

पारद का ढुलमुलपन
अणुओं का आकर्षण - संघर्षण अभिव्यंजित करता है ।
ईन्धन का निर्धन तन
दर्शन का पद्मासन परिसर्जित करता है ।

दुर्बोध्य बोधों के अपने आयाम हैं;
यमुना - तट राधा के अपने घनश्याम हैं;
इसीलिए आत्म - बोध जगता है :
जिज्ञासा जीवन की आशा है; मन की परिभाषा है;
चेतन संघर्षों के बीच स्तब्ध वात्या - आवर्त्तों में
क्षण के विमर्शों की, पल के संस्पर्शों की अव्याहत भाषा है;
ईहा की ज्वाला से आवृत्त, अन्तरिक्ष - बीच, शान्त,
ऊहा - सन्दोहों की बून्दों में बन्द एक नीली पिपासा है ।

जिज्ञासा जीवन की आशा है,
जिसका है अन्तर का व्योम - तीर्थ सपनों का केन्द्र - विन्दु,
जिसके सोपानों पर
अम्लान प्राणों के निष्प्राण गानों का सत्य तिरा करता है,
जिससे टकराती हैं ध्वनि - वितान रेखाएँ,
जिनमें निखरती हैं भास्वर भविष्यत् की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनती - बिगरती सी,
सजती - उभरती सी,
मधु - मूर्च्छित आकृतियाँ;
संबुद्ध - संबोधित आकृतियाँ,
मानो, ये गार्गी - मैत्रेयी की कामरूप आत्माएँ
करतीं सन्देहों की शाश्वत आवृत्तियाँ।

सांकेतिक ध्वनियों का
चुम्बकीय संशोधन अनुमोदन :
मानो जल - यानों के धूम्रसार माथों पर
उड़ती - मचलती हों अकस्मात् आगन्तुक चारण - सी टिड्डियाँ।

दूर - दूर मृग तृष्णा,
देशों - परिवेशों में,
मर्यादित क्लेशों की अन्तर्दिशाओं में,
विस्मृत - तट - बन्धों की जाग्रत निशाओं में,
क्रान्तदर्शि - चिन्तन के समतल पर गन्ध - मन्द फैलती।

तेजस् का बादवान
मुक्त हो, शाश्वत, वरिष्ठ हो,
इसलिये कि रूपान्वित करना रस - राशि को शेष है;
चिन्मय हो जीवन का व्यास जो अशेष है;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिये कि दृश्य विश्व
आत्म - मूल अदृश्य संविद् का
एक प्रति - रूपक है, एक महाभाष्य है;

इसलिये कि दृश्य विश्व
भास्वर भविष्यत् की नीली पिपासा है,
मौन - मूक तेजस् की आशा - जिज्ञासा है;
जिज्ञासा जीवन की आशा है : नीली पिपासा है·····।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मतियाँ

सुनने की कसक बनी ही रही

"नीली पिपासा" की कविताएँ सुनीं, ऐसी मनोहारिणी कि सुनने की कसक बनी ही रही; कविताएँ जो हृदय में मन्थन पैदा करें; जिन्हें फिरसे सुनने की इच्छा कभी पूरी ही नहीं हो। आपका यह प्रयास सदा बना रहे, यही कामना करता हूँ।

— श्री रामवृक्ष बेनीपुरी
५—११—६१

क्या भाषा और क्या भाव

श्री कृष्णजीवन भट्ट एक उच्च शिक्षित नवयुवक हैं। अंग्रेजी और संस्कृत-साहित्य का इन्होंने सम्यक् ज्ञान प्राप्त किया है। इनकी साहित्यिक अभिरुचि प्रशंसनीय है। इनकी कविताओं को पढ़कर तथा इनके मुख से सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। "नीली पिपासा" की कविताएँ क्या भाषा और क्या भाव दोनों ही दृष्टियों से उच्चकोटि की हैं। काव्य-शैली में अभिनवत्व है और काव्य का स्वर उदात्त। नूतन उपमाओं एवं लाक्षणिक प्रयोगों के कारण कविता का भाव - सौन्दर्य काव्य - मर्मज्ञों के लिए आस्वादनीय बन गया है। मुझे आशा है, इस तरुण कवि की प्रतिभा उत्तरोत्तर विकसित होती हुई अपने अंश-दानों से काव्य-साहित्य को समृद्ध करेगी।

— प्राचार्य जगन्नाथ प्रसाद मिश्र
प्राचार्य महिला महाविद्यालय
दरभंगा
३०—१२—६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राणवान् शिल्प : आयुष्मती कला

श्री कृष्णजीवन भट्ट की कविताओं से सम्पृक्त होकर आह्लादित हुआ। प्राणवान् शिल्प, आयुष्मती कला, चेतना में तारुण्य और प्रकृति में श्रद्धा एवं विश्वास। मैं आशान्वित हूँ कि श्री कृष्णजीवन भट्टजी साहित्य में साहित्य के नाम पर आनेवाले साहित्येतर द्रव्यों से साहित्य की रक्षा अवश्य करेंगे। शिवाः ते सन्तु पन्थानः।

—श्री रामदयाल पाण्डेय

१६—८—६०

सूत्र की भाषा : अछूता प्रयोग

श्री कृष्णजीवन भट्ट की रचनाओं को देखकर विस्मय होता है कि इसी उम्र में इनकी रचनाओं में दार्शनिकता कैसे उतरती चली आ रही है। अपने कुछ कवियों से यही शिकायत है कि अब तक वे रोमांटिक मूड में ही क्यों बने हैं?

"नीली पिपासा" नयी पीढ़ी के कवियों के सामने चुनौती बने, यह तो मैं नहीं चाहूँगा किन्तु साधना की प्रेरणा हो—यह मेरी कामना है।

भट्टजी की रचनाओं में स्पष्ट रूप से भाषा और भाव दोनों का सौष्ठव उभरा हुआ मिलता है। दूर तक सोच कर सूत्र की भाषा में रख देने की कला इनकी विशेषता है। 'देवता को चुनौती?' कविता की पंक्ति—

"तूने मन्दिर के द्वार से ही
देवता को चुनौती दी है।"

× ×

"वह तेरे पूर्वजों का तुझसे भटका हुआ संस्कार है"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

— प्राञ्जल अभिव्यक्ति है।

उसी तरह—

"जला डाल इस भ्रम के भूरे भदेस को
किसी बौद्ध सम्राज्ञी की 'अहम्मन्यता' की तरह
और जन्म दे एक 'अन्यता' को"

—का प्रयोग हिन्दी के लिए अछूता है।

वर्त्तमान राजनीति की घुटन-भरी हवा में साहित्यकार सबसे अधिक घुट रहा है-"अफीम का पेड़" उस प्रतिक्रिया का साहित्यिक स्वरूप है। भट्टजी ने इस प्रकार की रचनाएँ देकर हमारी कुंठा को जुबान दी है। मुझे सन्देह नहीं कि सुन्दर भविष्य इनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

— रमण

आस्थावान् की क्षमता : एक तिर्यक् हँसी

भट्टजी का स्वर पराजित पीढ़ी का स्वर नहीं है और न है वह किसी दिग्भ्रमित - पथभ्रष्ट यात्री का एकालाप। उसमें उस आस्थावान् की क्षमता है जो मझधार में हाथ - पैर मारता हुआ भी अपनी दृष्टि किनारे पर ही लगाये रखता है; उस दार्शनिक का आग्रह है जो विकृतियों को विकृति मात्र ही मान कर उस पर एक तिर्यक् हँसी ही बिखेर देता है। उनकी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि जो हो, पर यह स्पष्ट दीखता है कि उनमें परिप्रेक्षण की नवीनता के साथ - साथ भाव - बोध का एक नया स्तर भी है जो एक नया रागात्मक ऐश्वर्य, नये प्रतीक और विम्ब लेकर अभिव्यञ्जना के लिए मचल रहा है।

बड़ी आस्था के साथ मैं इस नये स्वर का अभिनन्दन करता हूँ!

— डॉ श्री कामेश्वर शर्मा
३-१०-६४

•

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi